Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जन ज्ञान [साप्ताहिक]

निरेशमाला-४

१३ ज्येष्ठ—संवत् २०२३
१३ जून १९७६

हर्ष विभोर मयूर

हमें भी आनन्द की ओर बढ़ने की प्रेरणा कर रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८ जून : जन्म दिवस पर

पंडिता राकेश रानी

दयानन्द संस्थान की बागडोर आपके सुदृढ़ हाथों में सुरक्षित है ।
७ जून को आप संस्थान की अध्यक्ष निर्वाचित हुयी है—

Dr. Vivek Arya Vedic ... Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्
जन-ज्ञान
कृण्वन्तो-विश्वमार्य्यम्
वेदाः
हिन्दी साप्ताहिक
नई दिल्ली

वर्ष १ ★ रविवार १३ जून : ३१ ज्येष्ठ २०३३ ★ अंक १६

ओ३म्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

सम्पादक
पंडिता राकेश रानी

सह-सम्पादक
कु० आभा

दूरभाष : ५६६६३९
: २०१५८४

पता : वेद मंदिर
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१, नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५

मूल्य एक प्रति ५० पैसे
वार्षिक मूल्य २०)
विदेश में ६ पौंड (हवाई डाक से)
४ पौंड : (समुद्री डाक से)
आजीवन ३०१ रु०

दयानन्दाब्द : १५१
सृष्टि संवत् : १९६०८५३०७६

संपादकीय

ज्योति का सूरज लेकर खड़े हो जाओ और चल पड़ो विजय के लिए

आज निराशा से हमें बिखरा दिया है। आत्म विश्वास के अभाव में हमारी कार्यशक्ति कुंठित हो गयी है। हम भौतिक साधनों पर अधिक और ईश्वर पर कम विश्वास कर रहे हैं। अज्ञान का अंधड़ बढ़ रहा है और हम मौन हैं। अंधविश्वास विष वृक्ष की तरह बढ़ रहे हैं और हम अपने को उन्हें काटने में असमर्थ पा रहे हैं। स्वार्थ ने हमें सीमित कर दिया है, पदों की भूख ने कार्यशक्ति क्षीण कर दी है और हमारा लक्ष्य बन गया है केवल धन संग्रह…

ऐसे वातावरण में आशाओं के केन्द्र दयानन्द संस्थान ने एक बार फिर सारे देश विदेश को जगाने का संकल्प लेकर १९७६-७७ का वर्ष **"सत्यार्थ-प्रकाश-शताब्दी वर्ष"** के रूप में मनाने का आवाहन किया है।

१९७७ के आर्यसमाज स्थापना दिवस तक प्रत्येक आर्य—आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द का भक्त सत्यार्थ प्रकाश बांटने का व्रत ले। अधिक से अधिक व्यक्तियों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का संकल्प लिया जाए और सभी का प्रयत्न यह हो कि हम अपने आस पास को सत्यार्थ प्रकाशमय कर देंगे।

आप उत्सवों की शताब्दी कई मना चुके हैं। आज यह किसी को भी बताने की आवश्यकता नहीं रही कि इन बड़े-बड़े प्रदर्शनों से क्या मिला। आर्यसमाज कितना बढ़ा और देश कितना बदला ? यह प्रयोग आप भली-भांति कर चुके हैं।

अब हमने आप को एक नया प्रयोग करने का, सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी मनाने का निमंत्रण दिया है। हम चाहते हैं कि 'वर्ष में दस लाख सत्यार्थ प्रकाश' का देश में प्रसार। १९७७ के आर्यसमाज स्थापना दिवस तक यह लक्ष्य पूरा होना ही चाहिए।

हमारा विश्वास है कि अभी ऋषि दयानन्द के भक्त और सत्यार्थ-प्रकाश के प्रसारक व्यक्तियों का अभाव नहीं हुआ। गन्दी राजनीति और गृह कलह के मध्य भी ऐसे तपस्वी साधकों की कमी नहीं है जो ज्योति का सूरज लेकर दिग्विजय के लिए प्रस्थान करने को तैयार हों।

सच्चे ऋषि दयानन्द के भक्तों को इन व्यक्तियों द्वारा हमारा निमंत्रण है कि नारे बहुत लग चुके, घोषणाएं भी हो चुकीं, प्रदर्शन और प्रस्ताव भी हो गए, अब आओ काम में लगें और आगे बढ़ें।

सत्यार्थ-प्रकाश हमारे प्राण हैं, जीवन का गीत और सत्य का ज्योति स्तम्भ है। क्रांति की मशाल बन कर इस महान् ग्रंथ ने युग को नयी दिशा दी है। आज यह महान् ग्रंथ प्रचार के लिए आप को पुकार रहा है। क्या आप इस निमंत्रण को अस्वीकार करेंगे ?

काम में लग जाओ, धन संग्रह करो और अपने-अपने क्षेत्र में सत्यार्थ प्रकाश प्रसारित करो !

१० लाख सत्यार्थ प्रकाश बांट कर सत्यार्थ-प्रकाश शताब्दी आप ने मनानी है— पीछे हटना वीरों का नहीं, कायरों का काम है…

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान के सदस्यों को वी० पी० अब नहीं भेजेंगे

वी० पी० भेजने का व्यय इतना अधिक बढ़ गया है कि उसे सहना कठिन है। लगभग ४) रु० एक वी०पी० पर व्यय आते हैं, जिसका लाभ न हमें होता है न किसी और को ही।

अतः बहुत सोच विचार कर हमने निश्चय किया है कि भविष्य में जिनका शुल्क जून मास में समाप्त होता है उन्हें केवल सूचित किया जाएगा। और यदि १५ जून तक धन न प्राप्त हुआ तो पत्र भेजना बन्द कर दिया जायेगा।

वर्षों जन-ज्ञान पढ़ने पर भी हमारे सदस्यों में यदि इतनी सहयोग भावना भी उत्पन्न नहीं हो सकी कि वे समय पर अपना शुल्क भी भेज दें तो इसे हम अपना दुर्भाग्य ही समझेंगे—

क्या यह आशा की जाए कि सभी सदस्य सूचना मिलते ही मनिआर्डर द्वारा अपना शुल्क भेज दिया करेंगे।

—संपादक

आशीर्वाद आचार्य पं० बिहारी लाल जी शास्त्री का

प्रिय भारतेन्द्र नाथ जी सप्रेम नमस्ते

बहूरानी, राकेश और बालिकाओं को आशीर्वाद

आज चारों वेद, चित्रावलि और जन ज्ञान के अंक प्राप्त हो गये। धन्यवाद चित्रावलि छपाकर आपने बहुत उत्तम कार्य किया है। प्रत्येक आर्य घर में यह रखने लायक है। मेरे घर में बालक इसे देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। आपके प्रकाशन बड़े प्रभावशाली रहे हैं। ईश्वर आपको स्वस्थ रूप से चिरंजीवी करे।

वेदों की जिल्दें बड़ी मनमोहक हैं, हर घर में वेद स्थापना होनी चाहिए।

रविवार को समाज में जाकर दिखाऊँगा।

बिहारी लाल शास्त्री

आर्य समाजों के चुनाव

—आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत के चुनाव में प्रधान श्री दलीपसिंह आर्य, उपप्रधान श्री मेघराज, मंत्री श्री कुल भूषण, उपमंत्री श्री बीरेन्द्र कुमार, कोषाध्यक्ष श्री ऋषिराज, तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री दीपचन्द चुने गए।

—आर्य समाज ब्यावर के निर्वाचन में—

पं० रविदत्त वैद्य प्रधान, श्री जमना लाल आर्य व श्री सुन्दर लाल उपप्रधान, श्री बलवन्त कुमार आर्य मंत्री, श्री वेदप्रकाश उपमंत्री, श्री विष्णु देव आर्य कोषाध्यक्ष तथा श्री जय नारायण पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज माण्डल टाउन के चुनाव में प्रधान श्री महावीर प्रसाद, उप प्रधान श्री बद्रीनाथ व श्री एस० सी० शर्मा, मंत्री श्री प्रद्युम्न, उपमंत्री श्री रामचंद्र स्नेही व श्री ओम प्रकाश वीर, प्रचार मंत्री श्री शोरी लाल तथा कोषाध्यक्ष श्री बलवन्त सिंह चुने गए।

—आर्य समाज दयानन्द मार्ग, शकूर बस्ती दिल्ली के निर्वाचन में श्री प्रेम नारायण प्रधान, श्रीमती शीला देवी उप प्रधान, श्री राजकुमार मंत्री, श्री सीताराम उप मंत्री, डा० इन्द्रादेवी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुईं।

—आर्य समाज शाहदरा के चुनाव में

श्री श्रद्धानन्द प्रधान, श्री ब्रह्मानन्द व श्री जयभगवान उपप्रधान, श्री विनोद मंत्री, श्री राम बाबू उप मंत्री व श्री हरपाल सिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज हनुमान रोड के निर्वाचन में निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान श्री राममूर्ति, उप प्रधान श्री सरदारी लाल, श्री रत्न लाल, श्री हरबंस लाल, मंत्री श्री हरिकृष्ण उपमंत्री श्री विजय कुमार व सुशील कुमार तथा कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार।

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा इटावा के चुनाव में श्री कुंवर लाल आर्य प्रधान, श्री श्याम आर्य उप प्रधान मंत्री श्री छेदालाल आर्य, उपमंत्री श्री सहदेव सिंह एवं कोषाध्यक्ष श्री तेज बहादुर आर्य चुने गये।

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी मनाइए

[सस्ते सुन्दर सत्यार्थ प्रकाश तैयार हैं]

१ शताब्दी संस्करण पुस्तक साइज बढ़िया कागज पर २००) सैकड़ा
२ प्रचार संस्करण बड़ा साइज बढ़िया कागज पर २५०) सैकड़ा
३ राज संस्करण बड़ा सजिल्द बढ़िया कागज पर ३५०) सैकड़ा
४ उपहार संस्करण कपड़े की जिल्द चिकने कागज पर ५००) सैकड़ा
५ मोटे अक्षर का बड़ा सुनहरी जिल्द मूल्य ५१) रियायती ३१)
६ सर्वश्रेष्ठ आर्ट पेपर पर मूल्य १०१) रियायती ६१)

संस्कार विधि—

१ बड़ा साइज सजिल्द ४००) सैकड़ा
२ बड़ा साइज अजिल्द ३५०) सैकड़ा
३ छोटा साइज अजिल्द २००) सैकड़ा
४ छोटा साइज सजिल्द ३००) सैकड़ा

ऋषि जीवनी २०० पृष्ठ मूल्य २)। १०० सैकड़ा
श्रीमद्दयानन्द प्रकाश ४०० पृष्ठ मूल्य ६) ४००) सैकड़ा

दयानंद संस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८ जून जन्म दिवस पर

—बनारसी सिंह पत्रकार

मातृ तुल्य भाभी !

जीवन भी एक यात्रा है। घुमक्कड़ स्वभाव पाया है अतएव उत्तर से दक्षिण तक सुविस्तीर्ण भारत भूमि के अनेक महानगरों, नगरों और ग्रामों को स्वतः निहारा है तो सैकड़ों अनजाने जाने-पहचाने भी हुए हैं। अपनी इस परिचय श्रृंखला में धार्मिक क्षेत्र के जाने माने अनेक जन आए हैं तो अनेक विद्वत्जनों के श्री चरणों में बैठकर भी जीवन के मर्म की विषद व्याख्याएं सुनी हैं। समाज सुधार के अनेक दावेदारों को जानने पहचानने की स्वर्ण संधि भी प्रभु ने मुझे प्रदान की है तो स्वयं को त्याग-तपस्या की नम्बरदार जताने वाले कई श्रेष्ठी जनों को भी समीप से देखने के सुअवसर जीवन में आये है। किन्तु इस लम्बे सिलसिले में ऐसे बहुत ही कम मिलते हैं कि जिनकी कथनी और करनी में साम्य है। और ऐसे भद्रजनों को उंगलियों पर ही गिन पाता हूँ कि जिनके सामीप्य में ऐसी अनुभूति हुई है कि मैं उनका चिर-ऋणी रहूँगा। क्योंकि उन्होंने मुझे अपने भाषण नहीं आचरण से प्रभावित किया है। ऐसे ही जो थोड़े से प्रेरकजन हैं उन्हीं में से एक हैं मेरी आदरणीय मातृ तुल्य भाभी पं० राकेशरानी।

उनसे प्रथम बार परिचय का सुयोग जीवन में लगभग १२ वर्ष पूर्व उस दिन आया जब मैं अनायास ही एक परिचित जन के साथ उस स्थान पर पहुंचा था जहां स्थित है आज दयानन्द संस्थान का मुख्यालय। उन दिनों भी भइया भारतेन्द्र जी आर्य समाज की सेवा में प्राण-प्रण सहित रत थे। किन्तु वे दिन अलग थे। क्योंकि तब उन्हें अपनी प्रत्येक अभिनव योजना के लिए किसी न किसी की मंजूरी प्राप्त करने की मजबूरी थी। हाँ तो उस दिन मैं वहाँ बिन बुलाया मेहमान था। किन्तु उस दिन के सारे परिवार के व्यवहार से ऐसी अनुभूति हुई थी कि मेरी उनकी जान पहचान न जाने कितनी पुरानी है। क्योंकि न तो भइया के व्यवहार में ही कृत्रिमता थी और न ही भाभी के ही। न औपचारिकता का सिलसिला था और न ही अपरिचितों सा वर्ताव। इसके स्थान पर उस व्यवहार में मैंने अपनत्व पाया था तो ममत्व भी।

बस वह दिन आज भी मेरे जीवन का एक ऐसा दिन था कि जो जीवन यात्रा के अविस्मरणीय दिवसों की माला में गुंथ गया है।

धीरे-धीरे परिचय का क्रम बढ़ता गया और उस दिन जीवन की एक और अविस्मरणीय घड़ी आ गयी जब मेरे रोग ग्रस्त होने पर वह मेरी कुटिया (किराए की) में आदरणीय भइया के साथ स्वास्थ्य की पूछताछ के लिए पधारीं। और उनके सान्त्वनापूर्ण शब्द मेरे लिए शुभाशीष बन गये।

परिचय धीरे धीरे प्रगाढ़ता में बदलता गया। मैंने उनके जीवन संघर्ष के अनेक चरणों को प्रत्यक्षतः देखा है। वे दिन भी आदरणीय भाभी ने नितांत संतोष एवम् प्रबल धैर्य का परिचय देते हुए व्यतीत किए जब घोर व्यवधानों के तान वितान पूरी पराकाष्ठा पर पहुंचे थे।

यदि भाई भारतेन्द्र नाथ जी ने रात रात भर आर्य जाति के अभ्युत्थान हेतु अपनी लेखनी को अविश्रान्त चलाया तो भाभी (पं० राकेशरानी) ने भी पति परायण आर्य देवी के आदर्श को साकार कर हर पग पर उनका साथ देकर अर्धांगिनी संज्ञा को चरितार्थ कर दिखाया। पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण तन्मयता से निभाते हुए वे लेखन कार्य में भी पीछे न रहीं।

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन में वे पग पग पर छायावत भारतेन्द्रजी के साथ चलीं तो गोरक्षा आन्दोलन में प्रिय ऋचा को गोदी में उठाए कारागार प्रवेश में भी उन्होंने भाग लिया और तिहाड़ में अनेक दिन बिताए।

और फिर एक अवसर ऐसा भी आ गया कि जब गुटबन्दी ने काम के स्थान पर नाम को महत्ता देते हुए रचनात्मक कार्य की राह में अपने 'भीम गोडे' गड़ा दिए तो भइया भारतेन्द्र जी ने 'एकला चलो रे' के आह्वान को अपनाया और जन-जन में सत्यज्ञान के प्रचारार्थ 'जनज्ञान' का शुभारम्भ किया तो उसके प्रकाशक तथा सम्पादक के दायित्वों को भाभी ने ही वहन किया।

अनेक वर्षों की साधना, अहर्निश ध्येय आराधना पल्लवित होने लगी तो विरोधों और अवरोधों के सिलसिले भी पनपते गए। किन्तु कर्मयोगी भारतेन्द्र जी की आदर्श सहधर्मिणी पं० राकेशरानी ने भी योगेश्वर श्रीकृष्ण के इस आह्वान को जीवन का प्रेरक वाक्य मानकर अपनी जीवन यात्रा को नया मोड़ दिया।

सुखे दुखे समः कृत्वा
लाभा लाभौ जया जयो।

विरोध के प्रबल झंझावातों, आलोचनाओं, अवरोधों और आर्थिक संकट के अंधड़ों को झेलते हुए भी मैंने भाभी के मुख पर सदैव मुस्कान ही पाई। निराशा शब्द तो उनके शब्द कोष में ही नहीं है।

८ जून, १९३५ को बुलन्दशहर के ग्राम गिनौरा जन्नारदार में माता लीलावती की कोख से जन्मी 'मुन्नी' को पिता पं० रामचन्द्र जी ने शैशव में ही वैदिक धर्म के पावन सन्देश व निर्देशों का प्रखर अनुगामी बनाने का सफल उपक्रम किया था। बाल्यकाल से ही नित्य प्रति संध्या-वंदन उनका अटूट नियम बना रहा है और उनके शब्दों में ही वह क्रम ही उनके जीवन की सफलता का मर्म है। १६ वर्ष की आयु में वे जब पं० भारतेन्द्रनाथ की सहधर्मिणी बनीं तो वह विवाह समारोह भी स्वयं में एक क्रान्तिकारी पग था जिसमें न बाजे गाते थे न धूम धड़ाका

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और दहेज का सिलसिला। किन्तु यह भी सत्य है कि यह कर्म और प्रेरणा का मिलन था।

उस समय से अब तक उन्होंने जीवन में अनेक संकटों को हँसते-हँसते अपनी जीवन नौका को खेया है। विवाह हुआ तो आप उत्तर प्रदेश के उस पूर्वांचल में पहुंचीं (बीघापुर) जहां नारी शिक्षा तो उन दिनों बहुत दूर की बात थी मुख से घूंघट उठाना भी पाप को निमन्त्रण देना था। किन्तु वे विवाह के कुछ ही दिनों बाद बीघापुर में पाठशाला की अध्यापिका के रूप में कार्यरत हो गईं। तदुपरान्त आर्यसमाज के सन्देश को उत्तरप्रदेश व पंचनद तथा हरियाणा जहाँ कहीं भी भारतेन्द्र जी ने गुंजाया वहाँ भाभी को भी हर पग पर साथ पाया। यद्यपि यह भी सत्य है कि भाषण नही कृति पर ही उन्हें अधिक भरोसा रहा है।

१९६५ में जन-ज्ञान के सफल सम्पादन का दायित्व उन्होंने ओढ़ा तो १९७१ में दीपावली पर जब दयानन्द संस्थान ने चारों वेदों के भाष्य के प्रकाशन का गुरुत्तर दायित्व बिना धन और साधनों के ही स्वीकार किया तो उस अनुपम चुनौती को आपने प्रभु के भरोसे स्वीकार किया। उसकी सफल पूर्णता स्तुत्य भइया भारतेन्द्र नाथ जी के दृढ़ संकल्प का प्रतीक है भाभी की अजेय कर्मशक्ति का।

वस्तुत: पं० राकेशरानी कर्मठता की सजीव मूर्ति हैं तो अदम्य आत्म विश्वास की प्रतिमूर्ति भी। १९५१ से १९६२ तक की अवधि में जब आप सतत कठरोग से ग्रस्त रहीं तो उस समय भी उनके मन में कभी निराशा के भाव न उभर पाए अपितु रोग जन्य आपदा को भी आपने पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन में भुलाए रखा।

पं० राकेशरानी स्वप्न लोक में विचरण करने में नहीं अपितु कठोर कर्म में आस्था रखती हैं। दयानन्द संस्थान के निर्माण में उन्होंने अपने रक्त का कण-कण और तप मेवा, प्रतिभा व योग श्रम तथा साधना का हर क्षण मनो सहित समर्पित किया है।

वे कार्यालय में प्रात: ८ बजे से लेखनी पकड़ कर बैठती हैं तो अनेक बार भोजन की भी सुध बुध भुलाकर देर गए रात्रि तक कार्यरत रहती हैं। कर्मशक्ति की वह एक ऐसी प्रेरक जीवित जाग्रत प्रतिभा हैं कि उन्हें सतत: कठोर कर्मरत देखकर किसी का भी श्रद्धानत होना स्वाभाविक ही है। शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति में भी कार्यरत रहने को ही सम्भवत: आपने रोगमुक्ति की सर्वोत्तम विधि माना है।

अपनी संतानों का लालन पालन तो प्रत्येक माता ही कर लेती है किन्तु अपने संपर्क में आने वाले प्रियजनों को मातृ तुल्य मंजुल स्नेह प्रदान कर पाना उन सरीखी आर्य देवी का ही स्वभाव हो सकता है। उनका सौम्य मुख मंडल और उस पर थिरकती मन्द मुस्कान उनके सुशान्ति स्वभाव का स्वत: प्रतीक है।

प्रत्येक आर्य (हिन्दू) परिवार में परम पिता परमात्मा की अमरवाणी वेद को पहुंचाने के स्वप्न को तो भइया भारतेन्द्र नाथ जी ने अपने मानस मन्दिर में संजोया था तो उसे क्रियात्मक रूप देने में उनकी कर्मशक्ति भी भाभी ही रही हैं। वस्तुत: भारतेन्द्रजी व राकेशरानी जी ऐसे दो तन व एक मन हैं कि जिनकी कर्मठता प्रत्येक आर्य जन के लिए प्रेरक है। संस्थान का आज का विस्तार भारतेन्द्र जी की कल्पना और कर्म तथा भाभी की साधना का ही चमत्कार है।

(आर्य समाज भिलाई सैक्टर ६)

—आर्य समाज सैक्टर ६, भिलाई नगर (म० प्र०) के निर्वाचन में निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान-श्री भूमित्र, उप प्रधान—श्री मती गार्गी देवी व श्री वेद प्रकाश, मंत्री श्री खेमचन्द, उपमंत्री श्री अवनिभूषण एवम् श्री सतीश, प्रचार मंत्री श्री इन्द्रकुमार कोषाध्यक्ष श्री मोहनलाल, पुस्तकाध्यक्ष श्री गोवर्धन लाल सहपुस्तकाध्यक्ष श्री भंजनलाल, युवा संगठन प्रमुख श्री रमेशचन्द।

आर्य समाज द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएं

—आर्य समाज रानीखेत के कोषाध्यक्ष पं० महेशचन्द्र द्वारा आयोजित 'कर्मफल घटना' प्रतियोगिता श्री गिरीश चन्द्र भट्ट (उप प्रधानाचार्य नेशनल इन्टर कालेज की अध्यक्षता में हुई। जिसमें सर्वश्री रामदत्त पंत प्रथम जयवीरसिंह चौधरी व भगवतीप्रसाद शर्मा द्वितीय रहे। इस अवसर पर श्री देवी प्रसाद प्रधान व श्री हीरावल्लभ (मंत्री) ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

—आर्य समाज ताड़ीखेत के कोषाध्यक्ष प० माधव नन्द द्वारा आयोजित 'स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज का योगदान' भाषण प्रतियोगिता में सर्व श्री रामदत्त पाण्डेय, ललित मोहन पंत व श्री राम दत्त पंत ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

रेणुकूट में शताब्दी समारोह

आर्यसमाज रेणुकूट के तत्वावधान में २२ से २५ अप्रैल तक आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती का व्याख्यान तथा योग और यज्ञ से शारीरिक रोगों का निदान कैसे करें इत्यादि विषय पर प्रवचन प्रभावशाली रहा। सभी जन लाभान्वित हुए। यहाँ योगमन्दिर की स्थापना भी हो गयी है।

मुजफ्फरनगर में विद्यालय

गाँधी कालोनी मुजफ्फनगर में आर्य समाज शताब्दी के उपलक्ष्य में दयानन्द बालमंदिर मुजफ्फरनगर दो साल से स्थापित है। राजकीय मान्यता स्थायी रूप में मिल चुकी है।

—हरबंसलाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

मेरी विदेश यात्रा—४

रेडियो पर व्याख्यान, स्त्रियों के वेदाध्ययन का प्रबल समर्थन

मैं जिस दिन सूरिनाम की भूमि पर उतरा, उसी दिन से रेडियो पर मेरे व्याख्यान प्रारम्भ हो गये थे। यहां छः रेडियो स्टेशन हैं जिनमें एक सरकारी है और पांच गैर-सरकारी, निजी। मेरे व्याख्यान राधिका, रापार, एस० आर० एस० और रानी—इन चार रेडियो स्टेशनों पर हुए।

सूरिनाम में रेडियो और टी० वी० पर लाइसेंस फीस नहीं है। सभी रेडियो स्टेशनों पर विज्ञापन होते हैं, इसी से इन्हें आय होती है। विज्ञापन औषधियों के भी होते हैं और जन्म दिन, विवाह-संस्कार, मृत्यु, समाचार, सभा-सम्मेलन आदि के भी।

मैंने 'राधिका' और 'रापार' इन दो रेडियो स्टेशनों द्वारा मंगलवार और रविवार को वेद-सन्देश देना आरम्भ किया। मेरा विचार था कि मैं खंडनात्मक भाषण न दूं। मैं वेद का सन्देश देता रहा। वेद-मंत्रों और वेद-सूक्तियों की व्याख्या चलती रही। परन्तु इस क्रम में व्यवधान आ गया।

एक दिन दो-तीन युवक मेरे पास आये और कहने लगे—'स्वामी जी ! आप तो रेडियो सुनते नहीं, आज पौराणिकों ने यह कहा है कि स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। इस बार आप रेडियो पर अपने भाषण में यह सिद्ध करें कि स्त्रियों को भी वेद पढ़ने का अधिकार है।' मैंने 'हाँ' कर दी।

८ जुलाई १९७५ को राधिका रेडियो से मैंने 'स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार है,' इस विषय पर बहुत ही ओजस्वी, सप्रमाण और युक्तियुक्त व्याख्यान दिया। व्याख्यान के कुछ अंश नीचे दे रहा हूँ—

"एक ओर विश्व में महिला दिवस मनाया जा रहा तो दूसरी ओर अभी तक भी ऐसे पोंगा-पंथी विद्यमान हैं जो यह कहते हैं कि स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। मैं युक्ति और प्रमाण दोनों प्रकार से स्त्रियों के वेदाध्ययन के अधिकार की सिद्धि करता हूँ।

पहले युक्ति की बात लीजिए। न्याय दर्शन में किसी बात की सिद्धि के लिए पांच अवयव दिखाये गये हैं। उसी पद्धति से मैं स्त्रियों के वेदाधिकार की सिद्धि करूंगा। हां, पहले युक्ति का स्वरूप समझ लीजिए। यदि हमें यह सिद्ध करना हो कि यहां आग है तो न्यायदर्शन के अनुसार उसका प्रकार यह होगा—

यहाँ आग है —प्रतिज्ञा

धुआं होने के कारण —हेतु

जहां-जहां धुआं होता है वहां-वहां आग होती है—उदाहरण

यहाँ भी धुआं है —उपनय

अतः यहाँ आग है —निगमन

इसी प्रकार स्त्रियों के वेदाधिकार की सिद्धि होती है—

स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार है

मानव मस्तिष्क ज्ञान मात्र का अधिकारी होने से।

स्त्रियों के भी मस्तिष्क हैं और वे भी ज्ञान प्राप्त करती हुई देखी गयी हैं इसलिए स्त्रियां भी वेदाध्ययन की अधिकारिणी हैं।

अतः पूर्वोक्त बात, स्त्रियों का वेदाध्ययन ठीक सिद्ध होता है।

है किसी में दम-खम जो इस युक्ति को काट सके ?

महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं—

प्रश्न—क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़ें ? जो ये पढ़ेंगे तो फिर हम क्या करेंगे ? और इनके पढ़ने में प्रमाण भी नहीं है, जैसा यह निषेध है—

स्त्रीशूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः।

स्त्री और शूद्र न पढ़ें, यह श्रुति है।

उत्तर—सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है। तुम कुआं में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोल कल्पना से हुई है किसी प्रामाणिक ग्रंथ की नहीं…।

क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता ? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए विधि करे ? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने-सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता ? और जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है।'

—सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास

महर्षि दयानन्द के इस तर्क को भी कोई आज तक नहीं काट सका है।

अब प्रमाण की बात लीजिए। वेद में मानव-मात्र के वेदाध्ययन के अधिकार की घोषणा निम्न मंत्र में है—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय
चारणाय ॥ यजु० २६।२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परमात्मा उपदेश देता है—जैसे मैं मनुष्य मात्र के लिए इस कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख को देने वाली ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूं, वैसे ही तुम भी किया करो। हमने (परमात्मा ने) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री आदि और अति शूद्र के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के, अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करके, दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों।

भागवत पुराण से भी स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार सिद्ध होता है।

हम दो अकाट्य प्रमाण यहाँ प्रस्तुत करते हैं—

जिस समय श्री कृष्ण जी हस्तिनापुर में पधारे उस समय उनके आगमन का समाचार जानकर युधिष्ठिर जी उनके स्वागत के लिए आये। उस स्वागत में सूत और मागध भी थे, स्त्रियाँ भी थीं, म्लेच्छ भी थे। उस समय श्री कृष्ण और युधिष्ठिर के मिलन का वर्णन करते हुए भगवतकार कहता है—

गीतवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेण भूयसा।
अभ्ययात् स हृषीकेशं प्राणाः प्राणमिवादृताः।

भा० १०/७१/२४

गायन-वादन और तुमुल वेद ध्वनि के साथ वे युधिष्ठिर श्री कृष्ण से ऐसे आदरपूर्वक मिले जैसे इन्द्रियाँ प्राणों से मिलती हैं।

यहाँ स्त्री, शूद्र, सूत, मागध सभी की उपस्थिति में वेद मंत्रों का घोष किया गया है। इससे स्त्रियों के वेदाध्ययन का अधिकार सिद्ध है।

एक बार कश्यप जी बहुकालीन समाधि से निवृत्त होकर अदिति के आश्रम में आये। उस समय वहाँ उत्सव आनन्द कुछ भी नहीं था। अपनी पत्नी के मलिन मुख को देखकर कश्यप जी ने पूछा—'हे भद्रे! तू उदास क्यों है? क्या कोई अतिथि तिरस्कृत होकर चला गया है?' अथवा—

अप्यग्नयस्तु वेलायां न हुता हविषा सति।
त्वयोद्विग्नधिया भद्रे प्रोषिते मयि कर्हिचित्॥

—भा० ८/१६/८

हे कल्याणी! मेरे परदेश जाने पर तू उद्विग्न चित्त होकर कहीं यथा समय हवि द्वारा अग्नि में होम करना तो नहीं भूल गई थी?

यहाँ यह स्पष्ट है कि अदिति प्रतिदिन यज्ञ करती थी। यज्ञ बिना वेद-मंत्रों के नहीं होता, अतः स्त्रियों को वेदाध्ययन सिद्ध है।

वेद में अपाला, घोषा आदि १८ स्त्रियों के नाम आते हैं जो ऋषिकाएँ हुई हैं और जिन्होंने वेद के सूक्तों का साक्षात् किया है। वैसे भी बहुत से विषय ऐसे हैं जिनका साक्षात्कार स्त्रियाँ ही कर सकती हैं, पुरुष कर ही नहीं सकते। एक सज्जन पूछने लगे—'स्वामी जी! ऐसा कौन सा विषय है जिसे पुरुष नहीं जान सकता, स्त्री ही जान सकती है?' मैंने उत्तर दिया—'क्या आप बता सकते हैं कि प्रसव पीड़ा (बच्चा जनने का दुःख) कैसा होता है?' वे सज्जन कहने लगे—'मुझे क्या पता मुझे कोई बच्चा थोड़े ही पैदा हुआ है।' बस, इसी प्रकार अनेक विषय ऐसे हैं जिनका साक्षात्कार स्त्री ही कर सकती है। उन्होंने वेदों का अध्ययन, मनन और चिन्तन किया। स्त्रियों का ऋषिका होना ही इस बात का प्रमाण है कि स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार है।

स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है, यह बात भी पुराणों में कही गई है। पुराण कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं हैं। अठारह पुराणों में से एक भी पुराण वेद व्यास का बनाया हुआ नहीं है। ये ऋषियों के नाम से स्वार्थियों के बनाये हुए हैं, समय-समय पर इनमें मिलावट होती रही है।

भविष्य पुराण में तो ईसा, मूसा और मुहम्मद का भी वर्णन मिलता है। यह पुराण अंग्रेजों के शासन काल तक बनता रहा है। कलकत्ता में इसका लेखन कार्य होता रहा है। भविष्य पुराण में अंग्रेजी भाषा की भी चर्चा की है। उस भाषा के उदाहरण देते हुए कहा गया है—

रविवारे च सण्डे च फाल्गुन चैव फर्वरी।
षष्टिश्च सिक्सटी ज्ञेया तदुदाहारमीदृशम्॥

—भवि० प्रतिसर्ग खण्ड १।६।३७

गरुंडी भाषा कैसी है? उस भाषा में रविवार को सण्डे (Sunday) फाल्गुण को फरवरी (February) और षष्ठी को सिक्सटी (Sixty) कहेंगे। ये उस भाषा के उदाहरण हैं।

क्या व्यास जी महाराज के युग में अंग्रेजी का बोलबाला था? क्या व्यास जी महाराज अंग्रेजी जानते थे?

यदि पुराण महर्षि वेदव्यास जी के बनाये होते तो उन में ऐसे गपोड़े नहीं होते—

तस्य ह यः पुरीषसुरभिसौगन्ध्यवायुस्तं देशं दशयोजनं समन्तात्सुरभिं चकार॥ —भाग० ५।५।३४

उनके (ऋषभदेव जी के) मल की सुगन्धि से वहाँ की पवन तक अति सुगन्धित हो गई। उस पवन से दस योजन (१२० किलोमीटर) तक का स्थान सुवासित हो जाता था।

जिन पुराणों में इस प्रकार की असम्भव गप्पें भरी हुई हों वो महर्षि वेद व्यास के बनाये नहीं हो सकते, हाँ मूर्खों के बनाये अवश्य हो सकते हैं।

इस बीस मिनिट के व्याख्यान से सारे सूरिनाम में और विशेष रूप से सूरिनाम की पौराणिक मण्डली में खलबली और तहलका मच गया। दूसरे दिन प्रातः काल से ही राधिका की सञ्चालिका को फोन किये जाने लगे कि स्वामी जी ने हमारा बड़ा खण्डन किया है। पुराणों को मुसलमान का बनाया कहा है। आर्य दिवाकर के प्रधान और मंत्री को भी फोन किये गये। श्री शाऊ जी को ऐसे ही फोन किये गये कि स्वामी जी ने वेदों को मुसलमानों द्वारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनाया गया बताया है। शाऊ जी ने मुझे फोन करके पूछा कि क्या आपने ऐसा कहा है? मैंने कहा—'मैं तो आर्य जगत् का संन्यासी हूँ और संन्यासी भी एक उत्तरदायी संन्यासी, आर्यसमाज का तो चपड़ासी भी यह नहीं कह सकता कि वेद मुसलमान के बनाये हैं।' शाऊ जी ने कहा कि आशा तो हमें भी नहीं थी परन्तु आपके व्याख्यान से एक खलबली मची हुई है। कुछ पौराणिक पण्डित भी राधिका स्टेशन पर पहुँचेंगे, आपको भी चलना होगा। कितने बजे चलेंगे?'

तीन बजे का समय निश्चित हुआ। आर्य दिवाकर की ओर से मैं, श्री शाऊ जी एवं बीरे जी राधिका रेडियो स्टेशन पहुँचे। पौराणिकों की ओर से कोई पं० कामता-प्रसाद आए थे। कामता जी ने कहा कि मैंने अपने कानों से सुना है, आपने यह कहा था कि पुराण मुसलमानों के बनाये हैं। मैंने उत्तर दिया—'मैंने जो कुछ कहा था वह सब टेप किया हुआ है। यदि मैंने ऐसा कहा है तो मैं आज ही सूरिनाम छोड़कर भारत चला जाऊँगा और यदि मैंने ऐसा नहीं कहा है तो रेडियो राधिका द्वारा पौराणिकों का प्रचार कार्यक्रम बन्द हो जाएगा।' पण्डित जी इसके लिए तैयार नहीं हुए अपितु अपनी कुर्सी से उछलकर बोले—'आप जानते नहीं मैं कौन हूँ?' मैं उत्तर देने लगा था कि मुझे शाऊ जी ने रोक दिया। फिर उन्होंने डच में राधिका की संचालिका से कुछ कहा। संचालिका ने पण्डित जी को यह कहकर भेज दिया कि मैं सारा व्याख्यान सुनूँगी, यदि कोई गलत बात हुई तो उस पर विचार किया जाएगा।

पण्डित जी गये। संचालिका ने बीस मिनट का पूरा टेप किया हुआ व्याख्यान सुना और उसी समय राधिका के उत्साही कार्यकर्ता, सूरिनाम के लोक प्रिय समाजसेवी पं० रामदेव जी को कहा कि आज रात्रि में स्वामीजी का सम्पूर्ण व्याख्यान पुनः प्रसारित किया जाये और जितनी बार भी इस व्याख्यान के विरोध में टेलीफोन आएँ उतनी ही बार इसे पुनः-पुनः प्रसारित किया जाये।'

६ जुलाई को रात्रि में अन्तिम समाचार इस प्रकार था—'स्वामीजी का व्याख्यान। भारत के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी जगदीश्वरानन्द के भाषण पर कुछ व्यक्तियों ने आपत्ति की है। आज राधिका की संचालिका ने सारे व्याख्यान को सुना और उनके आदेश अनुसार स्वामीजी का पूरा भाषण, समाचारों के तुरन्त पश्चात् प्रसारित किया जाएगा।'

समाचार समाप्त होते ही सारा व्याख्यान पुनः प्रसारित हुआ। पौराणिकों को मुँह की खानी पड़ी। चौबेजी चले थे छब्बे जी होने, दुबे जी ही रह गये।

रविवार महिलाओं के कार्यक्रम में मेरे भाषण के कुछ महत्त्वपूर्ण महिला उपयोगी अंश पुनः प्रसारित किये गये और संचालिका ने उन पर अपनी टिप्पणियां भी कीं।

सूरिनाम में पहुँचकर ३ मास पश्चात् यह मेरा पहला व्याख्यान था जिससे सूरिनाम की पौराणिक मंडली में और जनता में खलबली मच गई।

इस व्याख्यान के पश्चात् राधिका रेडियो आर्य दिवाकर और सनातन धर्म दोनों के लिए बन्द हो गया। मैंने संचालिका से कहा कि आपने मेरे साथ तो अन्याय ही किया है। अपराध किसी का और दण्ड मुझे! परन्तु राधिका रेडियो लगभग चार मास के लिए दोनों संस्थाओं के लिए बन्द रहा।

—आशाराम प्रेम

प्रेरक प्रसंग

सरल और कठिन!!!

एक दिन गुरु नानक देव अकेले बैठे हुए थे। एक डाकू उनके पास आया और उनके चरणों में गिरकर कहने लगा, 'मैं डाकू हूँ, अपने जीवन से परेशान हूँ, अपने को सुधारना चाहता हूँ। इन पापों से, जो मैं रोज करता हूँ मुक्ति चाहता हूँ। मुझे कोई उपाय बताइए, मेरा मार्ग-दर्शन कीजिए।'

नानक देव पहले तो उस डाकू के हाव-भाव देखते रहे फिर बोले, 'तुम आज से डाका डालना और झूठ बोलना छोड़ दो, सब ठीक हो जायेगा।'

डाकू उन्हें प्रणाम करके लौट गया।

लेकिन कुछ दिन के बाद फिर आया और कहने लगा, 'मैंने झूठ न बोलने और डाका न डालने की भरसक कोशिश की, मगर इन आदतों को छोड़ नहीं पाता। लेकिन मैं सुधरना अवश्य चाहता हू। आप मुझे कोई उपाय बताइए।' और वह उनके चरणों में गिर पड़ा।

गुरुजी पुनः सोच में पड़ गए। फिर उनके ओठों पर मुस्कान आई। वे उससे बोले, 'अच्छा, जो तुम्हारे मन में आए करो, लेकिन दिन भर झूठ बोलने, डाका डालने के बाद प्रतिदिन लोगों के सामने अपने इन सब कामों का बखान कर दो।'

डाकू को यह उपाय बहुत आसान मालूम हुआ। वह प्रणाम करके चला गया। इस बार बहुत दिन बीत गए डाकू लौट कर नहीं आया। फिर एक दिन जब गुरुजी ध्यानमग्न थे, अचानक वह उनके सामने आ खड़ा हुआ। गुरूजी ने जब उसे पास खड़े देखा, तो पूछा, 'बहुत दिनों के बाद लौटे हो।'

डाकू बोला—'मैं आपके बताये उस उपाय को बहुत आसान समझता था, लेकिन वह तो बहुत कठिन निकला। लोगों के सामने अपनी बुराइयां प्रकट करने में तो लाज आती है, सो मैंने बुरे काम करना ही छोड़ दिया है।

२००) सैंकड़ा का
सत्यार्थ प्रकाश बांटें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—रामकृष्ण 'भारती'

वैदिक प्रार्थनाएं

तुमसे बड़ा नहीं कोई

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः ।
देवो देवेभिरागमत् ॥५॥ (ऋ. १,१,५)

अग्नि, ज्योति के पुञ्ज महा हो,
कवि तुम हो जग के स्वामी ।
सत्यरूप तुम, अद्भुत ईश्वर, घट-घट में अन्तर्यामी ।
सभी गुणों की खान, पिता जी, तुमसे बड़ा नहीं कोई ।
हम तो हैं तेरे ही भगवन्, लिप्त विश्व में अतिमोही ।
दिव्य गुणों के धारण कर्ता, हमें प्रेरणा दो स्वामी ।
हृदय गुफा में आप प्रकट हों, हों हम जगभर में नामी ।
राज्य हमारा दिव्य गुणों से, शोभावान् बने न्यारा ।
पुत्र, भृत्य हम तेरे भगवन्, तू है हम सबका प्यारा ।

सुख की वर्षा कर दो प्यारे

यदंग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि ।
तवेत्तत्सत्यमंगिरः ॥६॥
(ऋ. १,१,६,)

अंग, प्राण, तुम सबके प्यारे, भेद न है कोई पाए ।
अर्पित करदें अपना सब कुछ, यही विनय है तुमसे प्यारे ॥
आत्मदान करता जो प्राणी,
वही सुखों को पाता है ।
उसको नहीं अपेक्षा कुछ भी,
भवसागर तर जाता है ॥
प्राण, प्राणप्रिय, निज भक्तों को,
आनन्दित करते रहते ।
हम पर भी तुम दया करो,
हे सखा, मित्र, प्रेमी सबके ॥
सुख की वर्षा कर ओ प्यारे,
सब कष्टों को दूर करो ।
अन्धकार से हमें बचाओ,
पाप-पंक सब दूर करो ॥
हम पर कृपा-दृष्टि रखना प्रिय,
तेरे हैं, जैसे भी हैं ।
अच्छे हैं तो, तेरे भगवन्,
बुरे अगर तेरे ही हैं ॥
सत्यव्रती, है यही निवेदन,
लाज हमारी तुम रख लो ।
मित्र, प्राण, अमृत बरसा दो,
युग-युग की चिरव्यथा हरो ॥

यह विश्व सार रचना तुम्हारी

वाय दायाहि दशतेमे सोमा अरंकृताः ।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥७॥ (ऋ. १,२,१)

शिखरिणी छन्द

जगत् व्यापक वायो, हम पर कृपा नित्य करते,
हमें दीं औषधियां, रस मधुर पी, तृप्त रहते ।
पिया है रस हमने, गुण-गण-सुधा प्राप्त करते,
समर्पित है सब कुछ, प्रियतम, शरण नित्य रहते ॥

× ×

ब्रह्माण्ड यह है रचना तुम्हारी,
अच्छी बड़ी है, सब यह तुम्हारी ।
रचना है जो भी, अर्पण तुम्हारे,
कृपा करो हे भगवन् हमारे ।

× ×

हम दीन हैं, आप प्रभो, सुधाकर,
पुकार सुन लो, भगवन् हमारी ।
पिता हमारे, हम पुत्र तेरे,
यह विश्व सारा रचना तुम्हारी ॥

वाणी का वरदान हमें हो

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टुधियावसुः ॥८॥ (ऋ. १,३,१०)

वाणी के पति, मेरे स्वामिन् विद्या के हो वर-दाता ।
कृपा करो हे नाथ, दयामय, आप सुखों के हैं दाता ॥
वाणी का दो दान दयामय, हो पवित्र मंगलकारी ।
अन्न-धान्य से पूर्ण सभी हों, भव के भय भंजनहारी ॥
दया करो हे दाता, हम पर, प्रेरक सबके, हे स्वामिन्!
सरस्वती का वर दो हमको, घट-घट के अन्तर्यामिन् ॥
परमोत्तम निर्मल मेधा का, हमको ऐसा दान करो ।
सब जड़ता कटुता मिट जाए, ऐसी प्रतिभादान करो ॥
सरस्वती ही सबका धन हो, यही प्रेरणा दो हमको ।
बुरे मार्ग से हमें हटाए, हमें दिखाए शुभ पथ को ॥
शास्त्रों की बोधक हो मेधा, विज्ञानों से पूर्ण सदा ।
घर-घर वर्षा हो अमृत की, घर-घर बरसे प्रेम-सुधा ॥
वेद-ज्ञान की, सरस्वती की, कृपा रहे, आशीष रहे ।
वाणी का वरदान हमें हो, माँ, हमको ऐसा वर दे ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वास्थ्य-सुधा

अफीम : जानलेवा नशा

★★★

नशा तो नशा ही है, जो भी इसकी जकड़ में फंसा—वह कठिनाई से ही उभर पाता है ! कोई भी लत आदमी की 'गत' बनाने को पर्याप्त है। हर नशे का प्रभाव भी निराला है। शराबी का हर कदम नशे की झमक में लड़खड़ाता है तो भंग की तरंग में रमने वाला कभी रोता है तो कभी गाता है। इसी भांति अफीम की पीनक में अफीमची जागता हुआ भी सोता है। नशा कोई सा भी हो इसकी लपेट में आने वाला प्रारम्भिक अवस्था में भले ही प्रमुदित होता हो अन्ततोगत्वा तो रोता ही है। नशा आरम्भ में मजा है तो अन्त में नशेबाज की कजा है।

विभिन्न नशीले पदार्थों का स्वदेश में भी चलन है। शराब की चर्चा तो समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के पन्ने में प्रायः पढ़ने को मिलती ही है, अफीम के अवैध कारोबार के समाचार भी यदा-कदा अखबारों में स्थान पाते ही हैं।

विश्व में अफीम उत्पादन की दृष्टि से भारत को अद्वितीय स्थान प्राप्त है, क्योंकि विश्व के कुल अफीम ७० प्रतिशत उत्पादन का भारत में ही होता है। यह मात्रा लगभग एक हजार टन वार्षिक बताई जाती है। इसमें से ६० प्रतिशत का निर्यात किया जाता है और शेष का औषधि उद्योग में प्रयोग। अफीम की कृषि पर सरकारी नियन्त्रण होने के बावजूद कतिपय समाज विरोधी तत्त्व चोरी छिपे अभी भी अफीम का धन्धा करते हैं और यह भी अनुमान है कि भारी मात्रा में पाकिस्तान होकर यह अफीम तस्करी के माध्यम से चीन पहुंचती है।

इसके कारण पाकिस्तान से लगी सीमा के जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर आदि में अफीम के नशे से अनेक लोग ग्रस्त हैं। इनमें से अनेक की स्थिति तो यह बताई जाती है कि उन्हें रोटी भले ही न मिले किन्तु वे मुंह मांगे दाम पर अफीम प्राप्त कर अपनी पीनक का सामान जुटाते हैं।

एक आकलन के अनुसार पिछले ५ वर्ष के दौरान राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, हरयाणा और उत्तर प्रदेश में अफीम की खपत में ५ गुनी वृद्धि हुई है। पंजाब तथा राजस्थान में भी अफीम के अनुरक्तों की संख्या दुगनी होने का अनुमान है।

अफीम के नशे का प्रारम्भ पहले पहल एक शौक के रूप में होता है और फिर व्यक्ति धीरे-धीरे इसका अभ्यस्त होता जाता है। कई लोगों की अफीम की खुराक तो ५० ग्राम तक पहुंच जाती है। बताया जाता है कि अफीम के नशे को त्यागना अन्य नशों की तुलना में कहीं अधिक कठिन है। प्रारम्भ में शौक के तौर पर अफीम का सेवन करने वाला अपने मस्तिष्क एवं शरीर में एक प्रकार की उत्तेजना का अनुभव करते हुए पूर्व की अपेक्षा अधिक कार्य करने लगता है और अन्ततोगत्वा क्षमता और आह्लाद की वृद्धि का क्षणिक झांसा ही अफीम खाने वाले व्यक्ति को उसका इस प्रकार से अभ्यस्त बना देता है कि उसे अफीम के बिना जीवन यापन भी एक विपदा ही नजर आता है !

अन्य मादक पदार्थों व द्रव्यों के समान ही अफीम के सतत सेवन के उपरान्त ऐसी स्थिति आ जाती है कि जब अफीम सेवन करने वालों को नशा देना भी बन्द कर देती है। उस स्थिति में यदि वह अफीम को छोड़ना भी चाहे तो उसके सम्बन्ध में यह उक्ति चरितार्थ हो उठती है कि 'वह तो कम्बल को छोड़ना चाहता है किन्तु कम्बल उसे नहीं छोड़ता।' कहा जाता है कि उस अवस्था में अफीम के त्याग का तात्पर्य है जीवन से हाथ धोना। उस व्यक्ति को दमा सता सकता है तो खूब दस्त भी लग सकते हैं और अनिद्रा तथा घबराहट ही नहीं अपितु अनेक स्थितियों में वह सूजन तथा पागलपन का भी शिकार हो जाता है। और उस अवस्था में उसकी हालत 'लाइलाज रोगी' की सी हो जाती है।

यदा कदा ऐसा भी होता है कि जब कोई व्यक्ति अफीम के सतत सेवन अथवा अधिक मात्रा में लिए जाने से संज्ञा शून्य स्थिति में आ जाता है। उसे सुस्ती सताती है तो शारीरिक कार्यक्षमता भी उसका साथ छोड़ जाती है और दीर्घकाल तक अचेत रहने की हालत भी उसे लाचार होकर दोचार होना पड़ता है। इस दृष्टि से तो अफीम की लत कैंसर, तपेदिक, दमा इत्यादि रोगों से भी बड़ी एक आफत है ! बताया से जाता है कि कुछ अफीमची तो समय पर अफीम न मिल पाने पर सर्पदंश तक कराकर अफीम के नशे का आनन्द पाने में संकोच का अनुभव नहीं करते।

अफीम की लत से जो राष्ट्र के लिए एक आफत है, लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए उसके सेवन के गम्भीर परिणामों से जनता को अवगत कराने के लिए व्यापक अफीम विरोधी प्रचार तो आवश्यक है ही, साथ ही यह भी आवश्यक है कि अफीम के अवैध धन्धे में लिप्त लोगों से निपटने के लिए कठोरतम दण्ड की व्यवस्था की जाए। इस प्रकार के धन्धे के लोगों से यदि अत्यधिक कठोरता बरती जाएगी तभी वे इससे विरत हो सकेंगे और राष्ट्र एक बड़ी आपदा से मुक्ति पा सकेगा। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—श्री आनन्द कुमार

आणविक शक्ति

यजुर्वेद में एक मन्त्र है—

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥१॥

(यजु०—१-१)

अभिप्राय है कि देव सविता (दिव्य गुण युक्त सूर्य) भली प्रकार संयुक्त करे। (क्या संयुक्त करे?) इषे (अन्न) और ऊर्जे (शक्ति) और प्राणी में क्रिया करने की शक्ति वायु।

वेदानुसार पृथ्वी पर अन्न और ऊर्जा, दोनों सूर्य की देन हैं। अन्न खाकर प्राणी में कार्य करने की सामर्थ्य (प्राण की) उत्पत्ति होती है और ऊर्जा से संसार के सब कार्य चलते हैं।

आज के युग में पृथ्वी पर मानव संख्या द्रुतगति से बढ़ रही है और जीवन के आधारस्वरूप इन दोनों वस्तुओं की आवश्यकता इतनी बढ़ गयी है कि हम अपने परम्परागत उपायों से इनको आवश्यक मात्रा में प्राप्त कर नहीं सकते।

जबसे मशीन युग आया है, तब से ऊर्जा की मांग बढ़ गयी है। सूर्य से पृथ्वी पर पहुंचने वाली ऊर्जा तो अपार मात्रा में है परन्तु मनुष्य उसका प्रयोग करने के स्थान अन्य स्रोतों से ऊर्जा की प्राप्ति करने लगा है।

उदाहरण के रूप में कोयला और तेल है। वास्तव में पत्थर का कोयला और मिट्टी का तेल भी तो सूर्य की देन ही हैं। यह कहते हैं कि प्राणी सृष्टि होने से पूर्व पृथ्वी वन से भरपूर थी। भूकम्पों के कारण बहुत से वन भूमि के नीचे दब गये और वहां भूम्यन्तर्गत गर्मी से वे कोयला तथा तेल में परिणित हो गये।

सूर्य की ऊर्जा को लकड़ी और अन्न-अनाज में बदलने के लिये प्रकृति ने ही प्रबन्ध किया था। वनस्पतियों में पर्ण हरित (chlorophyll) नाम की एक वस्तु है और उससे ही अन्न बनता है और लकड़ी (cellulose) बनती है। अन्न प्राणी खाते हैं और उसमें की संचित ऊर्जा से मनुष्य अपने शरीर में शक्ति का संचार करता है। पेड़ों में बनी लकड़ी ही कोयला और मिट्टी का तेल बने हैं।

शक्ति का अतुल भण्डार सूर्य से पृथ्वी पर आया है और नित्य सूर्य रश्मियों से आ रहा है।

वेद में ही कहा है—

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। (यजु०—१-१०)

अर्थात्—सूर्य देवता की दोनों बांहों और पुष्टिकारक हाथों से। क्या होता है? सूर्य से अपार शक्ति पृथ्वी पर आ रही है। सूर्य की दो बांहें हैं—इसकी प्रकाश रश्मियां (light waves) और ऊष्मा रश्मियां (heat waves)।

वर्तमान शताब्दी के आरम्भ में वैज्ञानिक यह समझ गये थे कि सूर्य में यह शक्ति का भण्डार है। वह कहां से आया है? सूर्य की शक्ति के स्रोत का ज्ञान तो पृथ्वी पर कुछेक अणुओं (atoms) के विखण्डित होने से पता चला था। उन अणुओं के विखण्डित होने से ऊर्जा का प्रसार होता था। पीछे पता चला कि अणु के विखंडित होने से जो शक्ति निकलती है, वह प्रकाश और ऊष्मा ही है और इससे यह अनुमान लगाया गया है कि सूर्य में बड़ी मात्रा में अणु विखण्डित हो रहे हैं और उस विखण्डन से वह अपार शक्ति सूर्य से निकल कर चारों ओर फैल रही है, जिसका एक बहुत ही छोटा-सा अंश पृथ्वी पर आया है।

इतना अनुमान लगाने पर वैज्ञानिकों ने सूर्य जैसा विखण्डन यहां पृथ्वी पर भी करने का यत्न किया है। एक सीमा तक वे इसमें सफल भी हुए हैं। कुछ अणु ऐसे देखे गये हैं कि वे स्वतः विखण्डित हो रहे हैं और उनसे ऊर्जा चारों ओर प्रसारित हो रही है। परन्तु वह स्वाभाविक विखण्डन इतनी धीमी गति से होता है कि उससे प्रसव कर रही ऊर्जा से कुछ उपकारी कार्य नहीं हो सकता।

अतः यह यत्न किया गया कि कोई तीव्र गति से विखंडित होने वाला अणु ढूंढ़ा जाये। वह मिला है और उससे अपार ऊर्जा का प्रसव होता देखा गया है।

अणु में ऊर्जा कहां से आती है? यह भी समझने की बात है। परन्तु इससे पहले यह समझना चाहिये कि अणु (atom) क्या है? आज से साठ-सत्तर वर्ष पूर्व कुछ लेखकों ने ऐटम को समझा और उसे हिन्दी भाषा में परमाणु लिखना आरम्भ कर दिया। वास्तव में ऐटम परमाणु नहीं है। यह अणु है। यदि भारतीय हिन्दी के विद्वान् संस्कृत साहित्य का भली-भांति अध्ययन करते तो वे समझ जाते कि वे ऐटम को परमाणु नहीं कह सकते।

कारण यह कि उस समय भी यह पता था कि ऐटम कई प्रकार के हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में भी पचास से ऊपर प्रकार के ऐटमों का ज्ञान था और संस्कृत तथा वैदिक साहित्य में परमाणु एक ही प्रकार का कहा है। सम्पूर्ण प्रकृति के परमाणु एक ही प्रकार के हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस समय की भूल अभी भी चल रही है। उदाहरण के रूप में 'जर्नल आफ दि इन्स्टीच्यूट आफ इञ्जीनियर्स' के अगस्त सन् १९७५ के हिन्दी के अंक में ऐटम को ही परमाणु माना है। वहां ९२ प्रकार के तत्त्व कहे हैं और उनके एक कण को परमाणु कहा है।

यह हिन्दी भाषा के (मूढ़) विद्वानों की अनभिज्ञता का प्रमाण है। वस्तुस्थिति यह है कि ऐटम ९२ प्रकार के पता चले हैं और परमाणु भी ९२ प्रकार के कहे जाते हैं। पूर्ण प्रकृति के परमाणु एक ही प्रकार के हैं; ये ९२ प्रकार के अणु हैं।

हम यहां ऐटम (अणु) की चर्चा कर रहे हैं। प्रत्येक अणु में नाभिका (core) होती है और उस नाभिका के चारों ओर इलैक्ट्रोन चक्कर काट रहे होते हैं। नाभिका में न्यूट्रोन और प्रोटीन होते हैं।

जब कोई पदार्थ किसी दूसरे के गिर्द चक्कर काटता है तो दोनों में आकर्षण के कारण ही ऐसा होता है। जैसे सूर्य और पृथ्वी परस्पर आकर्षण कर रहे हैं और पृथ्वी सूर्य के गिर्द चक्कर काटने लगी है।

इसी प्रकार अणु की नाभिक में प्रोटोन पर धन आवेश (positive charge) होता है और इलैक्ट्रोन पर ऋण आवेश (negative charge)। इसी कारण इलैक्ट्रोन हल्का होने के कारण प्रोटोन के गिर्द चक्कर काट रहा है। दोनों परस्पर एक शक्ति से आकर्षण कर रहे हैं। वैज्ञानिकों ने विचार किया कि यदि हम किसी प्रकार ऐटम को विखंडित कर दें तो इसकी वह शक्ति, जिससे इसके इलैक्ट्रोन प्रोटोन के गिर्द घम रहे हैं, प्रसव होने लगेगी। अतः अब यत्न होने लगा कि अणु को विखण्डित किया जाये और इसकी शक्ति जो प्रसव हो उसका प्रयोग किया जा सके।

वैसे तो वैज्ञानिक यह यत्न कर रहे हैं कि प्रत्येक प्रकार का अणु विखण्डित करने की तरकीब ढूंढ़ी जाये, परन्तु इसमें अभी सफलता नहीं मिली। कुछेक अणु विखण्डित किये जा सके हैं।

९२ प्रकार के तत्त्व (elements) हैं। प्रत्येक तत्त्व (element) के अणु होते हैं। अतः ९२ प्रकार के ही अणु होते हैं। एक तत्त्व के सब अणु बराबर-बराबर द्रव्य मान (mass) रखते हैं। अर्थात् द्रव्य के सब अणु समान भार वाले होते हैं। परन्तु एक द्रव्य के अणु का द्रव्य मान दूसरे द्रव्य के अणु से भिन्न होता है। इसे अणु भार (atomic weight) भी कहते हैं। यह द्रव्य मान उस अणु की नाभिका में उपस्थित प्रोटोन और न्यूट्रोन के कारण होता है। इलैक्ट्रोन तो बहुत छोटे-छोटे होते हैं। उनका द्रव्यमान बहुत ही कम होता है। अणु का भार मुख्य रूप में प्रोटोन और न्यूट्रोन के कारण होता है।

हाइड्रोजन का अणु सबसे कम भार वाला है और ९२ प्रकार के अणुओं में यूरेनियम का अणु सबसे भारी होता है। यूरेरियम के एक अणु का भार हाइड्रोजन के अणु से २३५ गुणा अधिक होता है।

यूरेनियम के रासायनिक गुण तो इसमें उपस्थित स्वतन्त्र इलैक्ट्रोन की संख्या पर निर्भर करते हैं। परन्तु इसका भार इसकी नाभिक में प्रोटोन और न्यूट्रोन की संख्या पर निर्भर है। इस कारण नाभिक में न्यूट्रोन और प्रोटोन की संख्या बढ़ायी-घटायी जा सकती है और तब भी रासायनिक रूप में अणु यूरेनियम ही रह सकता है। रासायनिक गुण तो इलैक्ट्रोन पर निर्भर करते हैं। इस कारण नाभिक में से कुछ न्यूट्रोन अथवा प्रोटोन के निकल जाने से रासायनिक रूप में अणु यूरेनियम ही रह सकता है।

यह यत्न किया गया है कि नाभिक के प्रोटोन अथवा न्यूट्रोन बाहर निकाले जायें तो अणु शक्ति प्रसव (उत्पन्न) होगी। यही किया गया है।

एक अणु के नाभिक में से प्रोटोन अथवा न्यूट्रोन कैसे निकाले तथा डाले जा सकते हैं? वैज्ञानिक यही करने में सफल हुए हैं। इससे ऊर्जा का प्रसव हुआ है।

प्राकृतिक यूरेनियम में U२३८१ १.३ प्रतिशत होता है और यही विघटित किया जा सकता है। इसमें U२३५—.०७ प्रतिशत होता है। उनकी मात्रा बहुत कम होती है और वे विघटित नहीं होते। U२३५ (वह यूरेनियम जिसके अणु का भार हाइड्रोजन से २३५ गुणा है) पर न्यूट्रोन का टकराव किया जाये तो यूरेनियम की नाभिका टूट जाती है और उसमें से शक्ति का प्रसव होता है।

यूरेनियम में U २३५ पर न्यूट्रोन के टकराव से इसमें विखण्डन होता है और इससे शक्ति का प्रसव होता है।

प्रसव शब्द का प्रयोग इस लेख में बार-बार किया गया है। प्रसव का अर्थ है—गर्भवती के बच्चे जनने की क्रिया। इसी प्रकार अणु के भीतर जो ऊर्जा संचित होती है उसके निकलने को भी प्रसव कहा है।

इसका अर्थ निर्माण नहीं, वरन् छुपी हुई ऊर्जा का प्रकट होना है। U २३५ में शक्ति बहुत अधिक होती है। यह अनुमान लगाया गया है कि एक पौण्ड U २३५ के विखण्डन से १,२५,००,००० k. w. विद्युत् उत्पन्न की जा सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रमोद कुमार 'प्रदीप'

क्या मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन है ?

इस युक्ति को दोहरा देना उपयुक्त होगा कि "आहार शरीर के लिए है न कि शरीर आहार के लिए।" मनुष्य की शारीरिक बनावट देख कर यही प्रतीत होता है कि प्रकृति ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है। मनुष्य और फलभक्षी जीवों के शारीरिक अवयवों में बहुत कम अन्तर है। चूंकि आहार मानव जीवन का रक्षक है अतः इसके निर्णय से पूर्व विवेक रखने की आवश्यकता है। यदि आहार संतुलित और विवेकपूर्ण हो तो शरीर में कोई रोग हो ही नहीं सकता।

मांस विष तो नहीं, पर इससे होने वाली बुराइयों की संख्या अधिक है। यह अप्राकृतिक होते हुए भी मनुष्यों के द्वारा खाया जाता है। मांस बिना किसी पशु की हत्या के प्राप्त नहीं हो सकता, इसलिए मांस के विरुद्ध धार्मिक बुद्धि वाले लोग बहुत कुछ कहने में युक्ति युक्त हैं। मांस के गन्दे और अस्वास्थ्यकर होने के अतिरिक्त बहुत सरलता से प्रमाणित किया जा सकता है कि मनुष्य के लिए मांस स्वाभाविक खाद्य नहीं है।

मानव के शरीर की रचना भी इस बात की पुष्टि करती है कि उसकी आंतें मांसभक्षी जीवों की तरह छोटी न होकर तृण भक्षी जीवों की तरह लम्बी होती हैं। उनके जबड़े इस प्रकार सटे हुए होते हैं कि वे एक दूसरे के सहयोग से किसी वस्तु को पीस सकें जैसे घोड़े, गाय और ऊंट के होते है। वे कुत्ते के जबड़े की तरह खड़े से लगे हुए नहीं होते। प्रकृति ने शरीर में से मल मोचन के लिए जो आश्चर्यजनक यंत्र लगाया है, उस पर विचार करने से भी यह स्पष्ट है कि मांस त्याज्य है। मांसाहार से जो अनुपयोगी मल बचता है, वह सड़कर बड़ी आंतों की पेशियों में रुकावट डालने वाला विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है। मांसाहार के अनुपयोगी पदार्थ से शरीर में इतना विषैला प्रभाव उत्पन्न होता है कि प्रकृति ने इसी कारण मांस भक्षी पशुओं की बड़ी आंत लम्बाई में छोटी बनाई है, जिससे सड़ने वाला अनुपयोगी पदार्थ पशु शरीर में आवश्यकता से अधिक एक क्षण भी न ठहर सके।

इंगलैण्ड में अत्यधिक अस्वस्थ हो जाने वाले व्यक्ति के लिए जो साधारण भोजन है वह बहुत ही अस्वाभाविक और मूर्खतापूर्ण है। पाश्चात्य लोगों को उनके माता-पिता द्वारा जिन्हें स्वयं भी इनकी अपेक्षा अधिक ज्ञान नहीं है, यह शिक्षा दी जाती है कि स्वास्थ्य और शक्ति के लिए मांस ही श्रेष्ठ आहार है। उसी तरह बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग भी हैं जो न तो अपने और न अपने बच्चों के पाचन क्रिया वाले अवयवों के सुकुमार यंत्रों की ठीक से संभाल कर सकते हैं।

किन्तु अब मांस सम्बन्धी भ्रम का निराकरण हो चुका है और विश्व के बुद्धिप्रधान और सुसंस्कृत वर्गों में मांस की श्रेष्ठता का भ्रम भी शीघ्रता से दूर होता जा रहा है।

हकीमों, वैद्यों तथा प्राचीन काल के प्रमाणित आयुर्वैदिक और यूनानी ग्रन्थों के मतानुसार मांस गरम और तर है। गरम और कफ प्रकृति वालों के लिए हानिकारक है। इसके साथ दूध, दही, छाछ, शहद, सिरका, तेल, खीर, शर्बत, बर्फ, तरबूज, मूली, तिल, गन्ना, मसूर आदि का प्रयोग हानिकारक है, अन्यथा रक्त और मस्तिष्क बिगड़ जाता है। फुलबहरी और कोढ़ हो जाने का भय है।

अमेरिका के दस बहुत ही विद्वान् डाक्टरों और वैज्ञानिकों ने भोजन के प्रश्न की काफी छान-बीन के बाद जो निष्कर्ष निकाला है उसका संक्षिप्त विवरण Dr. H. Carlsaon Manical M.D. ने निम्न शब्दों में दिया है— "मांस को बहुत से व्यक्ति अभी तक एक आवश्यक भोजन समझते आये हैं परन्तु किसी ने छान-बीन नहीं की कि इसमें पुष्टि प्रदान करने वाले गुणों के साथ-साथ कितने ही ऐसे अवगुण हैं जो स्वास्थ्य को बिगाड़ने का कारण होते हैं।"

इसका गुण ही इसका पहला दोष है। इसमें प्रोटीन अधिक होता है। परन्तु स्मरण रहे कि हमारे शरीर को एक सीमित मात्रा तक ही इसकी आवश्यकता होती है। इसके आधिक्य से यूरिक एसिड बढ़ जाता है। अधिक मांस से गठिया, वता, मिरगी, लकवा, दमा, मधुमेह, हिस्टीरिया, टाइफस तथा बदहजमी हो सकती है।

जो लोग मांस खाते हैं उन्हें यह ज्ञात ही नहीं होता कि वह कैसा है। कोई-कोई पशु इतने रोगी और बुरी दशा में होते हैं कि यदि मरने से पूर्व खाने वाले उन्हें देखते तो उन्हें मांस से घृणा हो जाती। साथ ही स्वस्थ पशु कोसों दूर से भूखे, प्यासे, थके बूचड़खाने में लाये जाते हैं तो इस सन्ताप की अवस्था में एक विशेष प्रकार का विष उनके अन्दर पैदा होता है। यह विषैला मांस कभी भी स्वास्थ्य के लिए लाभदायक और बलदायक नहीं हो सकता। उस समय तो अनर्थ हो जाता है जब मांस खाने

(शेष पृष्ठ २३ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—धर्मानन्द सरस्वती विद्यामार्तण्ड

वैदिक ईश्वरवाद और आधुनिक विज्ञान

वेदों का निष्पक्ष होकर यदि अनुशीलन करें तो हमें स्पष्ट ज्ञात होता है कि वेद ईश्वर के जिस स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं वह सर्वथा विज्ञान-सम्मत, बुद्धि-संगत और तर्कानुमोदित है। ईश्वर एक है, अनेक नहीं। वह सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, निराकार, निर्विकार, अजन्मा, अविनाशी, न्यायकारी, दयालु और जगत् का कर्त्ता धर्ता संहर्ता है। यह ईश्वर का वैदिक स्वरूप है।

वेदों से इतर अन्य पुराणादि ग्रन्थों में एक ईश्वर के स्थान पर बहुदेवतावाद का उल्लेख है। यह बहुदेवतावाद विज्ञान को मान्य नहीं हो सकता। वेदों के अनेक मन्त्रों में बतलाया गया है कि ईश्वर एक है, जिनमें से विस्तार भय केवल कुछ ही मन्त्रों का निर्देश यहाँ किया जाता है—

वैदिक एकेश्वरवाद

य एक इत् तमुष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः।

पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः॥ ऋ० ६।४५।१६

इस मन्त्र में स्पष्ट उपदेश है कि मनुष्य! (यः) जो (एकः इत्) एक ही (कृष्टीनां विचर्षणिः) सब मनुष्यों का ठीक-ठीक देखने वाला सर्वज्ञ (वृषक्रतुः) सुखों की वर्षा करने वाले कर्म वा ज्ञान वाला सर्वशक्तिमान् (पतिः जज्ञे) सबका स्वामी है। (तम् उ स्तुहि) तू सदा उसकी स्तुति कर।

'एकः इत्' इन शब्दों से एक परमेश्वर की ही स्तुति और पूजा का भाव अत्यन्त स्पष्ट है।

ऋग्वेद ८। १। १ में कहा है—

मा चिदन्यद् विशंसत सखायो मा रिषण्यत।

इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत॥

हे (सखायः) मित्रो! (मा चित् अन्यद् विशंसत) तुम किसी अन्य की स्तुति अर्थात् प्रार्थना उपासना न करो और इस प्रकार अन्य की स्तुति प्रार्थना करके (मा रिषण्यत) मत दुःख उठाओ। सदा एकान्त में और (सचासुते) मिलकर किये हुए यज्ञों में (वृषणम्) सुख, शान्ति और आनन्द की वर्षा करने वाले (इन्द्रम् इत्) एक परमेश्वर की ही (स्तोत) स्तुति करो (च) और (मुहुः) बार-बार उसी के (उक्था शंसत) स्तुति वचनों का उच्चारण करो।

कितने स्पष्ट शब्दों में इस मन्त्र में एक परमेश्वर की ही, जो सुख-शान्ति आनन्द का वर्षक है स्तुति-प्रार्थना तथा उपासना का विधान करते हुए, अन्यों की स्तुति का निषेध किया गया है, और इसे दुःखों का कारण बताया गया है। इस बात को पाठक ध्यान से देखें। 'इदि परमैश्वर्ये' धातु से इन्द्र शब्द बनता है। अतः उसका अर्थ परमेश्वर है, इसमें सन्देह का कारण ही नहीं। श्री सायणाचार्यादि पौराणिक भाष्यकारों को भी बहुत स्थानों पर इन्द्र का परमेश्वर यही अर्थ करने को विवश होना पड़ा है।

उदाहरणार्थ—

इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।

शिक्षाणो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि।

सामवेद के इस मन्त्र के भाष्य में सायणाचार्य ने लिखा है— "(इन्द्र) अनेक गुणविशिष्ट परमात्मन्।"

इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि शब्दों को देख कर कई लोग भ्रम में पड़ जाते हैं और समझने लगते हैं कि वेद अनेकेश्वरवाद के समर्थक हैं। किन्तु वेदों के निष्पक्षपात अनुशीलन से यह भ्रम सर्वथा दूर हो जाता है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में ही यह स्पष्टतया बताया है कि—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः

स सुपर्णो गरुत्मान्।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं

मातरिश्वानमाहुः॥

—ऋ० १।१६४।४६

अर्थात् (विप्राः) विद्वान् ज्ञानी लोग (एकं सद्) एक ही सत्स्वरूप परमेश्वर के विविध गुणों को प्रकट करने के लिए उसे इन्द्र, मित्र, वरुण आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। परमैश्वर्य सम्पन्न होने से उस परमेश्वर को इन्द्र, सबका स्नेही होने से मित्र, सर्वश्रेष्ठ और अज्ञानान्धकार निवारक होने से, (वरणीयः, अज्ञानान्धकारनिवारको वा) वरुण, ज्ञानस्वरूप और सबका अग्रणी नेता होने से अग्नि (अञ्चु-गति पूजनयोः), सबका नियामक होने से यम, आकाश या जीवादि में अन्तर्यामिरूपेण व्यापक होने के कारण मातरिश्वा आदि नामों से उस एक ही की स्तुति की जाती है।

यूरोप के एक सुप्रसिद्ध विद्वान् विचारक श्री अर्नेस्ट वुड् ने 'An Englishman deferds mother India' नामक अपनी पुस्तक में इस मन्त्र का अनुवाद देते हुए यह टिप्पणी की है—

In the eye of the Hindus, there is but one Supreme God. This was stated long ago in the Rigveda, in the following words :—

'Ekam Sad vipraa bahudhaa vadanti' which may be translated :

"The sages name the One Being variously".

अर्थात् हिन्दुओं की दृष्टि में एक ही परमेश्वर है इस सत्य का प्रतिपादन बहुत प्राचीनकाल में ऋग्वेद में "एकंसद्विप्राः बहुधा वदन्ति" इन शब्दों द्वारा किया गया था, जिनमें स्पष्टतया बताया गया है कि—ज्ञानी एक ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परमेश्वर को अनेक नामों से पुकारते हैं।'

यूरोप के संस्कृतज्ञों में अपने समय में सबसे अधिक सुप्रसिद्ध प्रो० मैक्समूलर को भी जिन्होंने अपने पहले ग्रंथों में वेदों को हीनोथीइज्म अथवा अति-स्तुति देवतावाद का प्रतिपादक बताने का प्रयत्न किया था यह बात अपने अन्तिम ग्रंथ The Six Systems of Philosophy में जो महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के पढ़ने के बाद लिखा गया था, स्वीकार करनी पड़ी कि वेदों में इन्द्र मित्र, अग्नि, वरुण, मातरिश्वा, प्रजापति इत्यादि शब्दों द्वारा वस्तुतः एक ही ईश्वर का प्रतिपादन किया गया है, जो अनन्त और निर्विकार है।

प्रो० मैक्समूलर तथा यूरोप के कई अन्य विद्वान् इस प्रकार स्पष्ट एकेश्वरवाद प्रतिपादक वेदमंत्रों को ईसाइयत अथवा विकासवाद के पक्षपात के कारण पीछे की रचना बताने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु यह उनकी मनघड़न्त कल्पना है, जो सर्वथा निराधार है। इस पक्षपात का स्पष्ट प्रमाण प्रो० मैक्समूलर के Vedic Hymns नामक ग्रंथ के निम्नलिखित लेख से मिलता है। यहाँ हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ० १०.१२१) का अनुवाद करते हुए जिसमें—

'हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्'
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ॥
यो देवेष्वधिदेव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम।
ततो देवानां समवर्त्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

इत्यादि मंत्रों में अत्यन्त स्पष्ट और प्रबल शब्दों में एकेश्वरवाद का प्रतिपादन है। जैसा कि स्वयं प्रो०मैक्समूलर ने 'History of Ancient Sanskrit Literature' में लिखा है:—

'I add only one more hymn (Rig 10.121) in which the idea of one God is expressed with such power and decision that it will make us hesitate before we deny to the Aryans an instinctive monotheism'.

अर्थात् मैं एक और सूक्त (ऋ० १०।१२१) का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसमें एक ईश्वर का भाव इतनी प्रबलता और स्पष्टता के साथ प्रकट किया गया है कि हमें अत्यन्त संकोच करना पड़ेगा पूर्व इसके कि हम आर्यों के एक नैसर्गिक एकेश्वरवाद से इन्कार करें।

इत्यादि शब्दों द्वारा स्वीकार करके भी स्वार्थ और पक्षपातवश वे टिप्पणी चढ़ाते हैं:—

This is one of the hymns which have always been suspected as modern by European interpreters. (Vedic Hymns p. 3)

अर्थात् यह उन सूक्तों में से है जिन पर यूरोपीय भाष्यकारों ने सदा नवीन होने का सन्देह किया है।

'प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।'

ऋ० १०।१२१।१०

इस मन्त्र पर प्रो० मैक्समूलर टिप्पणी चढ़ाते हैं—

"This last verse is to my mind the most suspicious of all,"

अर्थात् यह अन्तिम मन्त्र जिसमें परमेश्वर को सम्बोधन करते हुए कहा गया है कि तुम्हें छोड़कर अन्य कोई भी इस सारे जगत् में व्यापक और इसका स्वामी नहीं है, मेरी सम्मति में सबसे अधिक संदेहास्पद है।

यह संदेह इसलिए किया गया है कि ईसाइयत के पक्षपात के कारण प्रबल प्रमाण होते हुए भी, ये लोग इस बात को मानने में संकोच करते हैं, और इसके लिए उद्यत नहीं होते कि वेदों में एकेश्वरवाद की उच्च शिक्षा पाई जाती है।

ऋ० ६।२२।१ में कितनी स्पष्टता से एक सर्वव्यापक सर्वज्ञ परमेश्वर की स्तुति और उपासना का विधान है इसको देखिए—

य एक इद् हव्यश्चर्षणीनाम् इन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः।
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्।

अर्थात् (यः) जो (इन्द्रः) परमेश्वर (चर्षणीनाम्) सब मनुष्यों का (एकःइत्) एक ही (हव्यः) पूजनीय है, (तम्) उसकी (आभिःगीर्भिः) इन वाणियों से (अभि-अर्च) चारों ओर से प्रेम पूर्वक पूजा कर। (यः) जो (वृषभः) सुख शान्ति आनन्दवर्षक (वृष्ण्यावान्) सर्वशक्तिमान् (सत्यः) सत्य स्वरूप (सत्वा पुरुमायः सहस्वान् पत्यते) अत्यधिक बुद्धिशाली-सर्वज्ञ तथा सब प्रकार के बल से सम्पन्न होने के कारण सबको पराजित करने वाला सारे जगत् का स्वामी है वही परमेश्वर एकमात्र पूजनीय है।

इस प्रकार मंत्र में परमेश्वर को सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् सारे जगत् का स्वामी बताते हुए उसकी मानस पूजा का विधान किया गया है। इससे स्पष्ट एकेश्वरवाद का प्रतिपादन क्या कहीं हो सकता है, इसे निष्पक्ष पाठक विचारें।

ऋ० १०।८२ में एकेश्वरवाद का स्पष्ट प्रतिपादन सभी मंत्रों में विश्वकर्मा अथवा जगत्कर्ता के नाम से परमेश्वर का स्मरण करते हुए किया गया है।

मंत्र २ में विश्वकर्मा अर्थात् जगत्कर्ता परमेश्वर के गुणों का निम्न प्रकार वर्णन करते हुए इसके एक होने का प्रतिपादन है।

विश्वकर्मा विमना आद् विहाया
धाता विधाता परमोत सन्दृक्।
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति
यत्रा सप्त ऋषीन् पर एकमाहुः ॥

इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि वह (विश्वकर्मा) जगत्कर्ता परमेश्वर (विमना आत् विहायाः) विविध मनों का स्वामी, आकाश के तुल्य व्यापक (धाता) संसार का धारण करने वाला (विधाता), विशेष रूप से सूर्य चन्द्र तथा लोक-लोकान्तरों का धारण और पोषण करने वाला (परमः) अत्यन्त उत्कृष्ट, (उत्) और (संदृक्) सर्वज्ञ है, (यत्र) जिस प्रकार परमेश्वर के विषय में विद्वान् (आहुः) कहते हैं कि (सप्त ऋषीन् परे) वह सात इन्द्रियों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से परे (एकम्) एक ही है, और (यत्र) जिस परमेश्वर के आश्रय में (तेषाम्) उन इन्द्रियादि के (इष्टानि) अभिलषित सर्व भोग्य पदार्थ (इषा) उस प्रभु की प्रेरक शक्ति से (समदन्ति) भली प्रकार हर्ष के कारण बनते हैं।

यहां ईश्वर के जगत्कर्ता धर्ता और सर्वज्ञ होने का प्रतिपादन करते हुए उसे इन्द्रियातीत और एक ही बताया है। यह अति स्पष्ट है जिसमें सन्देह का अणु मात्र भी कारण नहीं।

इस सूक्त का मं० ३ तो इस प्रकरण में अत्यधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है जिसमें परमेश्वर को एक और देवों के सब नामों को धारण करने वाला बताया गया है। मन्त्र इस प्रकार है:—

यो नः पिता जनिता यो विधाता
धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानां नामधा एक एव
तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या॥

ऋ० १०।८२।३, यजु० १७।२७, अथर्व० २।२।३

अर्थात् (यः नः पिता) जो परमेश्वर हमारा पालक है, (जनिता) उत्पादक है, और (यः) जो (विधाता) विशेष रूप से हमारा धारण करने वाला, और (विश्वा धामानि) सब स्थानों, लोकों और (भुवनानि) उत्पन्न पदार्थों को (वेद) जानता है, (यः देवानाम् नामधं एकः एव) जो सब देवों इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम इत्यादि के नामों को प्रधानतया धारण करने वाला एक ही देव है (तम्) उस (संप्रश्नम्) अच्छी प्रकार से जानने योग्य परमेश्वर की ओर ही (अन्य भुवना) अन्य सब लोक और प्राणी (यन्ति) गति कर रहे हैं।

यहां परमेश्वर को पालक, उत्पादक, पिता, सर्वज्ञ, सर्वधारक बताते हुए स्पष्ट कहा है कि वह एक ही है जिसके अनेक गुणानुसार अनेक नाम हैं। अर्थात् अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण, रुद्रादि नाम प्रधानतया उस एक गुण-समुद्र परमेश्वर के हैं, गौण रूप से अन्यों के हैं। इससे बढ़कर एकेश्वरवाद का प्रतिपादन और अनेकेश्वरवाद का निराकरण और क्या हो सकता है?

सोऽर्यमा स वरुणः सः महादेवः।
सोअग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः॥ अथर्व० १३।४।५

इस मन्त्र में भी कहा गया है कि वही परमात्मा अर्यमा, वरुण, रुद्र, महादेव, अग्नि, सूर्य, महायम इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। वह एक परमात्मा ही नमस्कार करने के योग्य है इस बात को—

"दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिः
एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः।
तं त्वा यामि ब्रह्मणा दिव्य देव
नमस्ते अस्तु दिवि ते सधस्थम्॥

अथर्व० २।२।१

मृडाद् गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिः,
एक एव नमस्यः सुशेवाः।

अथर्व० २।२।२

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते स एष एक वृदेक एव॥

अथर्व० १३।४।२०

इत्यादि में भी स्पष्टतया बताया गया है—

'एक एव नमस्यः विक्षु ईड्यः' 'एक एव नमस्यः सुशेवाः।'

ये शब्द स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं जिनमें जीवेश्वर भेद भी स्पष्ट है। इनमें कहा गया है कि वह 'एकः एव नमस्यः' एक परमात्मा ही नमस्कार करने योग्य है। वह 'विक्षु ईड्यः' सारी प्रजाओं में पूजनीय है क्योंकि वह 'सुशेवाः' अर्थात् उत्तम सुखदाता है। वही 'भुवनस्य पतिः'—सारे संसार का स्वामी और रक्षक है। वह परमात्मा एक ही है—दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ दस परमेश्वर नहीं। (एकः) एक है, (एक वृत्) एक होकर वह सर्वव्यापक है, (एकः एव) वह एक ही है। इससे अधिक स्पष्ट एकेश्वरवाद का प्रतिपादन और क्या हो सकता है?

वैदिक ईश्वर का स्वरूप

यदि वैदिक ईश्वरवाद के विषय में कोई एक ही मंत्र उद्धृत करना हो जिसमें सागर को गागर में भर दिया गया है तो वह निःसन्देह यजु० ४०।८ है, जहां—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूःस्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

इन शब्दों द्वारा बताया गया है कि ज्ञानी उस परमेश्वर को प्राप्त करता है जो सर्वशक्तिमय, सर्वथा शरीर रहित, नसनाड़ी के बन्धन से रहित, निराकार, निर्विकार, शुद्ध, पवित्र तथा सर्वथा पाप रहित है। वह सर्वज्ञ, मन का भी साक्षी, सर्वव्यापक स्वयम्भू है जो (शाश्वतीभ्यः समाभ्यः) अनादि जीवरूप प्रजाओं के कल्याणार्थ (याथातथ्यतः) यथार्थ रूप से सब पदार्थों को बनाता और वेद द्वारा उनका उपदेश करता है। यहां शाश्वतीभ्यः समाभ्यः इन शब्दों से अनादि नित्य जीवों की सत्ता और याथातथ्यतः अर्थात् व्यदधात्' से जगत् की यथार्थता भी स्पष्ट है। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' इन अद्वैत-वेदान्तानुसार जगत् का मिथ्यात्व वेद को मान्य नहीं है।

जीवेश्वर भेद का अत्यन्त स्पष्ट प्रतिपादन

वेदों में जीवेश्वर भेद का स्पष्ट प्रतिपादन सैकड़ों मंत्रों में है, क्योंकि इस बात को सभी जानते हैं कि वेदों में अधिकतर मंत्र प्रार्थना के हैं और प्रार्थना उपास्य-उपासक, सेव्य-सेवक, पिता-पुत्र आदि का भेद मान कर ही सम्भव है। तथापि लेख के विस्तारभय से अभी निम्न-लिखित अति स्पष्ट मंत्रों का निर्देश मात्र ही पर्याप्त है जिनके अर्थ के विषय में भी सन्देह का अवकाश नहीं यदि निष्पक्षपात दृष्टि से विचार किया जाय।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

ऋ० १।१६४।२०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस मंत्र में जीवात्मा और परमात्मा की दो पक्षियों से उपमा देते हुए, जो दोनों चेतन और नित्य होने के कारण सहयोगी मित्र के समान होते हुए, नित्यता की दृष्टि से समान प्रकृति-रूप वृक्ष पर बैठते हैं, यह कहा है कि (तयोः) उन दोनों में से एक कर्मानुसार (स्वादु पिप्पलम्) स्वादु वा अस्वादु फल का भोग करता है, और (अन्यः) दूसरा कर्मफल का भोग न करता हुआ (अभि चाकशीति) सर्वज्ञ साक्षी बनकर जीवकृत कर्मों को चारों ओर से देखता है। इस प्रकार मंत्र के शब्दों से जीवात्मा और परमात्मा का भेद स्पष्ट है।

[२] निम्न ऋग्वेद १०।८२।७ के मंत्र में जीवेश्वर भेद का अति स्पष्ट प्रतिपादन है—

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद् युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति॥

अर्थात् हे जीवो! तुम उस परमात्मा को नहीं जानते जिसने इन सब पदार्थों को उत्पन्न किया है। वह ब्रह्म तुम जीवों से (अन्यत्) भिन्न किन्तु साथ ही (युष्माकम् अन्तरं बभूव) तुम्हारे अन्दर विद्यमान है। तुम अज्ञानान्धकार से आवृत, स्वार्थी तथा कपटी दम्भी होने के कारण उस सर्वव्यापक ब्रह्म को नहीं जानते, ऐसा मंत्र के उत्तरार्ध में कहा गया है। इस प्रकार परमेश्वर का जीवों से और सांसारिक पदार्थों से (जिनका वह परमेश्वर उत्पादक है) भेद मंत्र में स्पष्टतया निरूपित किया है। यही मंत्र यजुर्वेद १७।३१ में भी पाया जाता है—

'य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा
न वेद यस्यात्मा शरीरम्।
य आत्मनि तिष्ठन्नन्तरोयमयत्येश
त आत्माअन्तर्याम्यमृतः॥

इत्यादि वचन इस मंत्र के व्याख्यान रूप प्रतीत होते हैं, जिनमें कहा गया है कि जो परमात्मा आत्मा के अन्दर रहता हुआ भी आत्मा से भिन्न है, जिसको अज्ञानी आत्मा नहीं जानता, आत्मा जिसके निवासार्थ मानो शरीर रूप है, जो आत्मा में स्थित होकर सबको वश में रखता है' हे गार्गि! वह तुम्हारा अन्तर्यामी अविनाशी परम आत्मा है। इस मंत्र के अर्थ में श्री सायणाचार्य, उव्वट, महीधरादि अद्वैतवादी आचार्यों को बड़ी खैंचातानी इसको जैसे-तसे करके अद्वैतवाद समर्थक बताने के लिए करनी पड़ी है।

[३] ऋ० ८।९६।६ का निम्न मंत्र भी जीव, ईश्वर और प्रकृति तथा प्रकृति से उत्पन्न जगत् के भेद को स्पष्टतया बताता है—

तमु ष्टवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात्।
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भिरुपो नमोभिर्वृषभं विशेम॥

इस मंत्र में कहा गया है कि हम (तम् उ स्तवाम) उस ईश्वर की स्तुति करें (यः इमा जजान) जिसने इन सब सूर्यादि पदार्थों को बनाया है, (विश्वा जातानि अवराणि अस्मात्) ये उत्पन्न सब पदार्थ इस परमेश्वर की अपेक्षा बहुत ही हीन हैं। (इन्द्रेण) आत्मा के द्वारा हम (मित्रं दिधिषेम) सबके सच्चे मित्र परमेश्वर का ध्यान करें, (नमोभिः गीर्भिः) नमस्कारयुक्त वाणियों से (वृषभम्) सुखों के वर्षक परमात्मा के (उपविशेम) समीप बैठ जायें, उसकी सच्ची उपासना करें। इस मंत्र द्वारा ब्रह्म, जीव और जगत् का भेद अत्यन्त स्पष्ट है।

[४] ऋ० ८।९५।३ के निम्न मंत्र में परमेश्वर को जीवरूप सनातन प्रजाओं का स्वामी बताया गया है जो उनके परस्पर भेद को स्पष्ट सिद्ध करता है।

त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि

अर्थात् हे परमेश्वर (त्वं हि) तू ही निश्चय से (शश्वतीनां प्रजानां) जीवरूप नित्य प्रजाओं का (पतिः असिः) स्वामी है।

[५] निम्न सुप्रसिद्ध मंत्र भी जीवेश्वर भेद को अत्यन्त स्पष्टतया प्रमाणित करता है जहां भगवान् से प्रार्थना की गई है कि—

इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षाणो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि॥

ऋग्वेद ७।३२।२६' सामवेद मं० २५९ ऐन्द्र पर्व

(हे इन्द्र) परमेश्वर (पिता पुत्रेभ्यः यथा) जिस प्रकार पिता पुत्रों को ज्ञान प्रदान करता है इसी प्रकार तू (नः) हमें (क्रतुम् आभर) उत्तम ज्ञान और बुद्धि दे। हे (पुरुहूत) अनेक भक्तों द्वारा पुकारे गये प्रभो! (अस्मिन् यामनि) इस संसार-मार्ग में अथवा 'यमनुउपरमे चित्तवृत्तियों के निरोध के योगमार्ग में (नः शिक्ष) तू हमें शिक्षा दे, जिससे हम (जीवाः) जीव (ज्योतिः अशीमहि) ज्ञान-ज्योति वा ज्योतिःस्वरूप तुझको प्राप्त करें।

श्री सायणाचार्य ने सामवेद संहिता मं० २५९ के भाष्य में इस मंत्र का इतना उत्तम व्याख्यान किया है कि उसे उद्धृत करना उचित और आवश्यक प्रतीत होता है। निरुक्त के प्रमाण से इन्द्र का अर्थ परमात्मा करते हुए वे लिखते हैं—

एवं गुण विशिष्ट परमात्मन्! त्वं (क्रतुम्) कर्म स्वविषय ज्ञान वा (नः) अस्मभ्यम् (आभर) आहर, प्रयच्छेत्यर्थः, तत्र दृष्टान्तः पिता पुत्रेभ्यो यथा लोके विद्यां धनं वा प्रयच्छति तथा (नः) अस्मभ्य विद्यां धनं प्रयच्छ। हे (पुरुहूत) बहुभिराहूतेन्द्र! (यामनि) सर्वैः प्राप्तव्येऽस्मिन् प्रकृते ब्रह्मणि (जीवा वय) (ज्योतिः) परं ज्योतिः (अशीमहि) सेवेमहि॥

[श्री सायणाचार्यकृत सामवेद संहिताभाष्यं जीवानन्द वि० सा० सम्पादितम्, कलकत्ता पृ०१६७]

माधव ने अपने सामवेद भाष्य में भी—

त्वद्दत्तया च प्रज्ञया जीवाः—जीवन्तो वयं (ज्योतिः) ज्ञानम् (अशीमहि) प्राप्नुयामेत्यर्थः।

(सामवेद संहिता सभाष्या ऐडयार पृ०१९०)

इस प्रकार लगभग उसी आशय का भाष्य किया है। मन्त्र के शब्द इतने अधिक स्पष्ट हैं और उनसे जीवों का परमेश्वर से भेद इतना अधिक व्यक्त है कि उससे कोई विद्वान् इन्कार कर ही नहीं सकता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतं स्मर।

यजु० अ० ४० का यह मन्त्र भी (जो ईशोपनिषत् में ज्यों का त्यों पाया जाता है) इस प्रसंग में उल्लेखनीय है, जहाँ स्पष्ट है कि हे (क्रतो) कर्मशील जीव ! तू (ओम् स्मर) ओं पदवाच्य सर्वरक्षक परमेश्वर का स्मरण कर, (क्लिबे स्मर) शक्ति की प्राप्ति के लिए परमेश्वर का स्मरण कर और (कृतं स्मर) अपने किये हुए को याद कर—आत्मनिरीक्षण कर। यहाँ भी जीवेश्वर भेद का स्पष्ट प्रतिपादन है। ऐसे ही—

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः। वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥ यजु० ११।४ ॥

यो नो दाता स नः पिता महां उग्र ईशाकृत्।
ऋ०८।५२।५

यो भूतानामधिपतिर्यस्मिंल्लोका अधिश्रिताः। य ईशे महतो महान् तेन गृह्णामि त्वामहन् ॥
यजु० २०।३२

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषम्। यजु० ३२।१४

इत्यादि अनेकों मन्त्रों को जीवेश्वर भेद दिखाने के लिए उद्धृत किया जा सकता है।

कुछ पाश्चात्य विद्वान् और वैदिक एकेश्वरवाद

पाश्चात्य विद्वानों में से भी जो २ अपने को विकासवाद और ईसाइयत के पक्षपातपूर्ण मोह से ऊपर उठा चुके हैं उन्होंने वैदिक एकेश्वरवाद को अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है। उदाहरणार्थ प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् चार्ल्स कोलमैन ने वैदिक ईश्वरवाद का निम्नलिखित सुन्दर तथा महत्वपूर्ण शब्दों में प्रतिपादन किया है—

"The Almighty, Infinite Eternal, incomprehensible, self-existent Being, He who sees everything though never seen is Brahma—the One Un-known True Being, the Creator, Preserver and Destroyer of the universe. Under such and innumerable other definitions is the Deity acknowledged in the Vedas."

(Mythology of the Hindus by Charles Coleman)

इस उद्धरण का सारांश यह है कि वेदों में सर्वशक्तिमान्, अनन्त, नित्य अविज्ञेय, स्वयम्भू, सर्वज्ञ, एक सृष्टि का कर्त्ता धर्त्ता और संहर्ता माना गया है।

कौन्ट जान्स जर्ना (Count Janstjerne) नामक प्रसिद्ध विद्वान ने Theogony of Hindus P. ५३ में वेद मन्त्रों के उद्धरण देकर लिखा है—

"These truly sublime ideas can not fail to convince us that the Vedas recognise only one God, who is almighty, Infinite, Eternal, self-existent, the Light and Lord of the universe."

अर्थात् इन उद्धरणों में प्रकाशित भावों से हम निश्चिततया इस परिणाम पर पहुँचे बिना नहीं रह सकते कि वेद एकेश्वरवाद का ही प्रतिपादन करते हैं जो ईश्वर सर्वशक्तिमान्, अनन्त, नित्य, स्वयम्भू और जगत् का प्रकाशक तथा स्वामी है।

जर्मन विद्वान् श्लीगल इत्यादि ने भी इसी भाव को 'It can not be denied that the early Indians possessed a knowledge of true God"

(Wisdom of the Ancient Indians)

अर्थात इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्राचीन आर्यों को सच्चे ईश्वर का ज्ञान प्राप्त था—इत्यादि शब्दों में प्रकट किया।

एक पारसी विद्वान् का वैदिक एकेश्वरवाद विषयक लेख

फर्दुन दादाचान B. ALL. F., D. Th. नामक विद्वान् ने Philosophy of Zoroastrianism and Comparative study of Religions नामक उत्तम पुस्तक लिखी है। वे लिखते हैं—

"The Vedas teach nothing but Mono-theism of the purest kind."

अर्थात् वेद विशुद्ध एकेश्वरवाद की शिक्षा देते हैं।

एक मुसलमान विद्वान् का महत्वपूर्ण लेख

ऐसा ही विचार सर यामिन खाँ नामक मुसलमान विद्वान् ने God, soul and universe in science and Islam, नामक पुस्तक में प्रकट किया है। उसने स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के विषय में लिखा है कि—

"Swami Dayanand, a man of great learning began to preach the old religion of the Vedas which conceived unity of God."

अर्थात स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो बहुत बड़े विद्वान थे, पुराने वैदिक धर्म का प्रचार शुरू किया, जिसमें एकेश्वरवाद का प्रतिपादन था।

वैदिक धर्म का ईश्वर के विषय में यह सिद्धांत है कि वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, निराकार, न्यायकारी दयालु, जगत् का कर्ता, धर्ता और संहर्ता है। वह एक ही पूजनीय है। उसके अटल नियम भौतिक और नैतिक जगत् में कार्य कर रहे हैं, जिन्हें वेदों में ऋत और सत्य के नाम से पुकारा गया है।

आजकल विज्ञान का युग है। बहुत से लोग ऐसा समझते हैं कि वर्तमान विज्ञान ने जहाँ बहुत से अद्भुत आविष्कारों से संसार को चकित कर दिया, वहाँ उसने ईश्वरवाद को भी समाप्त कर दिया है। उनका ऐसा विश्वास है कि सभी बड़े वैज्ञानिक ईश्वरवाद के विरोधी थे, और उन्होंने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि इस संसार का कर्ता कोई नहीं; यह संसार अपने आप ही विकासवाद के नियमानुसार बनता और बिगड़ता रहता है। कम्युनिज्म के नाम से भी प्रायः अनीश्वरवाद का प्रचार रूस में तथा अन्यत्र किया जाता है, जिसका युवकों पर बहुत बुरा प्रभाव होता है और इससे उनके चरित्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भ्रष्ट होने की भी बहुत अधिक सम्भावना रहती है। अतः इस लेख मे मैं वर्तमान विज्ञान के पिता के नाम से प्रसिद्ध सर आइजक न्यूटन और अन्य वैज्ञानिकों के ईश्वरवाद विषयक विचार शिक्षित जनता के सम्मुख रखना आवश्यक समझता हूँ। आशा है हमारे देश के शिक्षित इन विचारों का प्रचार करके, दुर्भाग्य वश देश में फैलते हुए निरीश्वर-वाद को दूर करने में सहायक होंगे।

सर न्यूटन का वक्तव्य :

सबसे पहले मैं वर्तमान विज्ञान के पिता के नाम से प्रसिद्ध सर आइजक न्यूटन के वाक्यों में स्पष्ट बताना चाहता हूँ कि वे पूर्ण ईश्वर-विश्वासी थे। उन्होंने अपने ज्योतिषशास्त्र विषयक Principal नामक ग्रंथ में लिखा था कि—

"All this material universe is the handiwork of One Omniscient and Omnipotent Creator."

अर्थात यह सारा भौतिक जगत् एक सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान परमेश्वर की रचना है।

उसके गुणों का वर्णन करते हुए सर न्यूटन ने लिखा

"We are therefore to aknowledge One God. Infinite, Eternal, mnipresent and Omnipotent the creator of all things, most wise most just most good, most holy."

(Quoted from "The Metaphsysical Foundations."

(Modern Science by Arthur Burtt S.T.M. Ph. D. P. 282)

अर्थात् हमें एक ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना होगा जो अनन्त नित्य, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान सृष्टि कर्ता, सबसे अधिक न्यायकारी और सबसे अधिक पवित्र है।

इन शब्दों को पढ़ते हुए किसे आर्य समाज के द्वितीय नियम का स्मरण नहीं होता, जो निम्न शब्दों में है—

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर अमर, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

'Optick' नामक अपने ग्रंथ में भी यह प्रश्न उठा कर कि—

"Whence is it that nature doth nothing in vain and whence arises all that order and beauty which we see in the world."

अर्थात क्या कारण है कि प्रकृति कोई कार्य व्यर्थ नहीं करती, और संसार में जो व्यवस्था और सौंदर्य देखते हैं, वे कहाँ से आते हैं इत्यादि।

इनका उत्तर देते हुए वैज्ञानिक शिरोमणि न्यूटन ने ठीक ही लिखा है—

"These things being rightly despatched does it not appear from phenomena that, there is Supreme Being incorporal living, intelligent, Omnipresent, who in infinite space sees the things themselves intimately and thoroughly, perceives them and comprehends them wholly by their immediate presence to himself."

(Opticks by Sir Newton ; P. 344)

अर्थात् क्या इन विषयों को ठीक तौर पर समझने पर यह स्पष्ट प्रतीत नहीं होता कि एक निराकार, चेतन, बुद्धिमान् सर्वव्यापक है जो सब वस्तुओं को यथार्थ रूप में सम्पूर्णतया देखता और अन्तर्यामी रूप से ठीक-ठीक जानता है।

सर आलीवर लॉज का कथन

सर आलीवर लॉज अपने समय के सबसे बड़े वैज्ञानिक और रायल सोसायटी तथा British Association for the advancement of Science के प्रधान थे। उन्होंने एक निबन्ध में लिखा—

"We are deaf and dumb to the infinite grandeur around us unless we have insight to appreciate the whole and so to recognise in the woven fabric of existence, flowing steadily from the loom in an infinite progress towards perfection the evergrowing garment of a transcendent God."

(Is modern Intelligence outgrowing God ? by V. T. Sunderland P. 197)

भावार्थ यह है कि हम अपने चारों ओर जो असीम सौन्दर्य पाते हैं, उसके विषय में बहरे और गूंगे रहते हैं जब तक कि हमारे अंदर समस्त जगत् के महत्त्व को समझने और उसके अन्दर ओतप्रोत सर्वव्यापक परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करने की आन्तरिक दृष्टि व बुद्धि न हो।

लार्ड केल्विन की स्पष्टोक्ति—

लार्ड केल्विन ने जो १६वीं सदी के एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थे, यह स्पष्ट घोषणा की थी कि—

Science positively affirms creative Power. We are absolutely forced by Science to believe with perfect confidence in a Directive Power in an influence other than physical or electrical forces."

(Quoted in 'Science and religion' by Seven-men of science. P. 48)

अर्थात् विज्ञान एक सृष्टिकर्ता की सत्ता का स्पष्ट रूप में प्रतिपादन करता है। हमें विज्ञान उस नियामक शक्ति में पूर्ण विश्वास के लिये बाधित करता है, जो भौतिक और वैद्युतिक शक्तियों से भिन्न है। लुई पैश्चर नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक का प्रातः स्मरणीय वाक्य है—

Posterity will one day laugh at the foolishness of the modern materialistic philosophers. The more I study nature, the more I stand amazed at the works of the Creator.

अर्थात् आगे आने वाली सन्तति आधुनिक प्रकृति-वादी दार्शनिकों की मूर्खता पर हँसेगी। जितना अधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं प्रकृति का अध्ययन करता हूँ उतना ही मैं परमेश्वर के कार्यों को देखकर आश्चर्य चकित होता हूँ।

टॉमस ऐडिसन के ईश्वर सत्ता समर्थक उद्गार—

टॉमस ऐडिसन नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और आविष्कारक ने लिखा था कि—

"Too many people have got a microscopic idea of the Creator. If they would only study His wonderful works as shown in nature herself and the natural law of the Universe, they would have a much broader idea of the Great Engineer. Indeed I can almost prove His existence by chemistry. One thing is certain. The Universe is dominated by intelligence, I tell you, no person can be brought into close contact with the mysteries of the nature or make a study of Chemistry, without being convinced that behind all, there is Supreme Intelligence. I am convinced of that. I can perhaps, some time demonstrate the existence of such intelligence with the certainty of a demostration in mathematics."

(Is Modern Intelligence outgrowing God by V .T. Sunderland)

अर्थात् बहुत से मनुष्यों को कर्त्ता के विषय में अणु-मात्र ज्ञान है। यदि वे प्रकृति और प्राकृतिक नियमों में उसके अद्भुत कार्यों का अनुशीलन करेंगे तो उन्हें उस महान् स्रष्टा (इंजीनीयर) का अधिक विस्तृत ज्ञान हो सकेगा। वस्तुतः मैं रसायन-विज्ञान द्वारा उसकी सत्ता को सिद्ध कर सकता हूँ। एक बात निश्चित है कि विश्व में बुद्धि व्याप्त है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि कोई व्यक्ति प्रकृति के रहस्यों और रसायन-शास्त्र का अध्ययन यह विश्वास धारण किये बिना नहीं कर सकता कि इन सबके पीछे एक (परमेश्वर की) सर्वोच्च शक्ति कार्य कर रही है। मैं इस बात को गणित के समान स्पष्टतया प्रदर्शित कर सकता हूँ, इत्यादि।

डा० मास्टरमैन, F. R. S. M. A. D. Sc., F. R. S. E. की उक्ति—

"The more we discover of his handiwork, the more we beome assured of His existence." The Religion of the Seientists, by Drawbridge, M. A., P. 121)

अर्थात् जितनी भी उस परमेश्वर की रचना की खोज करते हैं, उतना ही उसके अस्तित्व में हमारा विश्वास बढ़ता जाता है।

डा० मूर की महत्वपूर्ण धारणा—

डा० बी० मूर०, M. A. D. Sc, F. R. C. S. ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'The Origin and Nature of Life' के पृष्ठ २३ में लिखा है :—

"The ordered beauty of the world and nature suggests an infinite intelligence with powers of action such as no man or other creature possesses."

अर्थात भौतिक जगत् का व्यवस्थापूर्ण सौंदर्य एक असीम बुद्धि का, जिसके साथ क्रिया शक्ति संयुक्त है, परिचय देता है, जो मनुष्य अथवा अन्य किसी प्राणी में नहीं है।

जगदविख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टीन (Einstein) का लेख :—

"I believe in God who reveals Himself in the orderly harmony of the Universe. I believe that intelligence is manifested throughout all nature. The basis of all scientific work is the conviction that the world is an ordered and comprehensive entity and not a thing of chance."

(Science and the Idea of God by W. M. Earnest Harking)

अर्थात मैं उस ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता हूँ जो अपने को जगत् की व्यवस्थित समता के रूप में प्रकट कर रहा है। मैं यह विश्वास रखता हूँ कि सारी प्रकृति के अन्दर एक बुद्धिमत्ता प्रकट हो रही है। सारे वैज्ञानिक कार्य का आधार यह विश्वास ही है कि संसार एक व्यवस्थित सर्वांगपूर्ण सत्ता है, न कि आकस्मिक वस्तु।

इसी प्रकार The Supreme intelligence in and above nature विषयक भाषणदाता प्रो० फ्लेमिंग, M.A.,D. Sc ,F.R.S. (जिनका अत्यन्त महत्वपूर्ण ईश्वर सत्ता का प्रबल समर्थक भाषण 'Science and Religion by seven Men of Science, P. ५८ में छपा है) Human Destiny के लेखक मोयल कौमुटे तथा अन्य अनेक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के ईश्वरवाद-समर्थक उद्धरणों को दिया जा सकता है, किन्तु लेख-विस्तार भय से ऐसा करना सम्भव नहीं। कहीं यह न समझा जाय कि कुछ थोड़े से वैज्ञानिकों का ऐसा मत है, इसलिए अन्त में डा० पाल कैरस कृत सुप्रसिद्ध पुस्तक 'The religion of Science' अर्थात् विज्ञान का धर्म' से यह उद्धृत करना आवश्यक प्रतीत होता है:—

"The Religion of Science is not atheistic, but theistic. God determines the law of any possible kind of nature. God is that which determines the shape of nature and directs the course of energy."

(The Religion of Science by D. Paul Carus)

अर्थात् विज्ञान का धर्म नास्तिक वा निरीश्वरवादी नहीं, अपितु ईश्वरवादी है। परमेश्वर प्रकृति के नियमों और रूप का नियामक है, और वही शक्ति के प्रकार का प्रेरक है।

जो वैज्ञानिक भौतिक विकासवाद को मानते हैं, वे भी अब प्रायः ईश्वर की सत्ता से इन्कार नहीं करते, बल्कि हेनरी ड्राइमण्ड नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक के शब्दों में कहते हैं कि 'Evolution shows God everywhere' (Is modern Intelligence outgrowing God P. २००) अर्थात 'विकास सर्वत्र ईश्वर को प्रदर्शित वा सिद्ध करता है।' अतः वैज्ञानिकों का विरोध मनुष्य के शरीर धारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सीमित, अल्पज्ञ ईश्वर की कल्पना (Anthropomorphism) से है, न कि वैदिक ईश्वरवाद से।

प्रो० फ्लेमिंग M. A. D. Sc., F. R. S. ने The Supreme Intelligence in and above nature. (प्रकृति के अन्दर और ऊपर सर्वज्ञ की सत्ता) नवम्बर १६१४ ईसवी में लन्दन में मनाये विज्ञान सप्ताह (Science week) में युक्तियुक्त व्याख्यान देते हुए उपसंहार इन महत्वपूर्ण शब्दों में किया—

'What Science Yields !

"We can say that scientific study most certainly shows us the presence in this physical universe of an order, stability, Directive Power and intelligibility. These qualities are not spontaneously produced. They do not come by choice. This universe is not merely a thing. It is a thought and thought implies and necessitates a thinker. Hence there is in this Universe a Supreme Thinker or Intelligence of which our own intelligence is but a faint copy."

("Science and Religion by Seven Men of Science." P. 48)

अर्थात् विज्ञान हमें क्या बतलाता है? हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक अनुशीलन पूर्ण निश्च के साथ इस भौतिक संसार में क्रम व व्यवस्था स्थिरता, संचालक शक्ति और बुद्धिगम्यता को प्रदर्शित करता है। वे गुण स्वयं आ सकते। वे स्वयं चुनाव या पसंद द्वारा भी नहीं नहीं आते। यह संसार एक विचार का परिणाम है। इस लिए संसार में एक सर्वोत्कृष्ट महान् विचारक व बुद्धिमान् है जिसके सामने हमारी अपनी बुद्धि एक अस्पष्ट छाया सी है।

कितने स्पष्ट शब्दों में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० फ्लेमिंग ने विज्ञान द्वारा ईश्वर के अस्तित्व का समर्थन किया है। पाठक इतने से ही समझ सकते हैं।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० क्रेसी मोरीसन ने जो न्यूयार्क ऐकेडमी ऑफ साइन्स (विज्ञान संस्थान) के अध्यक्ष थे, रीडर्स डाइजेस्ट (Reader's Digest) नामक मासिक पत्रिका के लिए जिसकी १३ भाषाओं में प्रतिमास २० करोड़ के लगभग प्रतियां बिकती हैं, "Seven Reasons why a Scientist Believes in God" अर्थात ७ कारण कि क्यों एक वैज्ञानिक ईश्वर में विश्वास करता है, लिखा था, जो प्रथम बार रीडर्स डाइजेस्ट के जनवरी १६४८ के अंक में प्रकाशित हुआ था। ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में गणित शास्त्र के प्रोफेसर कौल्सन F.R.S. आदि के विशेष अनुरोध से उसे रीडर्स डाइजेस्ट के नवम्बर १६६० के अंक में पुनः प्रकाशित किया गया था। इस महत्वपूर्ण लेख का प्रारम्भिक परिच्छेद निम्नलिखित है:—

"We are still in the dawn of the scientific age and every incruase of light reveals more brightly the handiwork of an intelligent creator. In the 90 years since Darwin, we have made stupendous discoveries, with spirit of sccientific humility and of faith grounded in knowledge.

(Seven Reasons why a Scientist Believes in God by A. Cressy Morrisson Former President of the New York Academy of Sciences, Readers Digest Nov. 1960)

अर्थात् हम अभी वैज्ञानिक युग की उषा में हैं। और प्रत्येक प्रकाश वा ज्ञान की वृद्धि एक बुद्धिमान् जगत्कर्ता की कृति को और अधिक स्पष्टता से प्रकट करती है। डार्विन के पश्चात् के इन ६० वर्षों में हमने महत्वपूर्ण आविष्कार किये हैं। वैज्ञानिक नम्रता और विश्वास की भावना के साथ जो ज्ञान पर आधारित हो, हम ईश्वर की सत्ता की अनुभूति के अधिकाधिक समीप पहुँच रहे हैं। इसके पश्चात् उन्होंने ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने के लिए ७ प्रबल कारणों का निर्देश किया है जिनका हम विस्तार भय से अभी उल्लेख नहीं कर सकते।

चार्ल्स इलियट (Charles Eliot) नामक वैज्ञानिक ने लिखा है:—

"The evidence is overwhelming that there exists an eternal energy which is intelligent and which inspires the whole creation instant of time and throughout the infite space."

अर्थात् इस बात की प्रबल साक्षी विद्यमान है कि सनातन नित्य शक्ति विद्यमान है जो बुद्धिपूर्ण और प्रयोजन-शालिनी है। और जो सारे संसार के सर्वकाल में स्फूर्ति दायिनी है।

करोलस लिनो (Corollus linnaus) नामक बनस्पति शास्त्रज्ञ वैज्ञानिक ने स्पष्ट घोषणा की है—

"In my scientific studies of the plant world. I see God everywhere."

अर्थात् मैं बनस्पति जगत् के वैज्ञानिक अनुशीलन में सर्वत्र परमात्मा के दर्शन करता हूँ।"

सर आर्थर एडिंगटन नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ज्योतिषी ने जो कुछ लिखा, उसका सारांश है—"वर्तमान विज्ञान को १६ वीं शताब्दी के उस भौतिकवाद और भाग्यवाद का परित्याग करना पड़ेगा, जो कहता था कि संसार की व्याख्या केवल यन्त्रवत् व्याख्या से हो सकती है। धर्म का सम्बन्ध आत्मा और मन से है और उसे हिलाया नहीं जा सकता।"

रौबर्ट मिल्लिकान (Robert millikan) नामक वैज्ञानिक ने लिखा है कि—'God is the unifyiug principal of the universe."

अर्थात् परमेश्वर संसार का मिलाने वाला (संयोजक) सञ्चालक वा नियामक तत्व है।

यहाँ यह बात स्मरणीय है कि जिन वैज्ञानिकों ने ईश्वरवाद का खण्डन किया है, उन्होंने बाइबिल, पुराण आदि में वर्णित मनुष्यवत् ईश्वर-कल्पना (कल्पित ईश्वर) का निराकरण किया है, न कि ईश्वर की सत्ता मात्र का। उदाहरणार्थ श्री सी० एस० मिडिलमेन F. R. S. I. E. नामक वैज्ञानिक ने बाइबिल में प्रतिपादित ईश्वर की मानववत् कल्पना के विषय में लिखा है—

"Such anthropomorphism is childish."

ईश्वर की ऐसी मानववत् कल्पना बच्चों का खेल है।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—ब्रह्मदत्त, जयपुर

महर्षि दयानन्द और यौन शिक्षा

१९वीं शताब्दी में जिन युग निर्माताओं ने जन्म लिया उनमें महर्षि दयानन्द का स्थान सर्वोपरि है। इस का कारण है तत्कालीन विद्वानों ने जीवन के किसी एक पक्ष पर ही विचार किया, परन्तु महर्षि दयानन्द की क्रान्तदर्शी बुद्धि से जीवन का कोई भी महत्त्वपूर्ण अंग छिपा न रह सका। महर्षि ने जीवन के हर महत्त्वपूर्ण विषय पर अपने अमूल्य विचार प्रकट किए है।

आज भारत के विद्यालयों में यौन शिक्षा दिये जाने की मांग जोरों पर है। यदि यौन शिक्षा अपने उचति रूप में बालको को दी जाय तो हो सकता है आज की युवा पीढी जो अनेकों यौन रोगों से पीड़ित है अपने भविष्य को सुरक्षित रखने का कोई उपाय ढूंढ सके।

महर्षि दयानन्द ने न जाने कितने अनछुए विषयों पर अपनी लेखनी उठायी है। यौन शिक्षा के बारे में भी हम बहुत ही महत्त्वपूर्ण संकेत महर्षि के ग्रन्थों में पाते है।

महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि" माता पिता को चाहिए कि अपनी संतान को वीर्य की रक्षा से 'आनन्द और नाश से दुःख-प्राप्ति जना दे, और उन्हे इस प्रकार उपदेश करे: —

"देखो! जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल (और) पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण में यही रीति है कि विषयों का, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, संभाषण, और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होवें।"

"जिसके के शरीर में वीर्य नही होता, वह नपूंसक, महाकुलक्षणी (होता है) और जिसको प्रमेह रोग होता है. वह दुर्बल, निस्तेज निर्बुद्धि, (और) उत्साह, साहस, धैर्य, बल, पराक्रमादि गुणो से रहित होकर नष्ट हो जाता है।"

महर्षि आगे लिखते हैं, "(इसलिए) जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण (और) वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे, तो पुनः इस जन्म में तुम्हें यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा, जब तक हम लोग गृहकर्मों को करने वाले जीते हैं, तभी तक तुम को विद्या ग्रहण और शरीर का बल बढ़ाना चाहिए। इसी प्रकार की अन्य-अन्य शिक्षा भी माता और पिता करें।"

उपरोक्त विचारों का गम्भीरता से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि महर्षि यौन शिक्षा के समर्थक थे। मगर वे यौन शिक्षा दिये जाने का स्थान विद्यालयों को नहीं बनाना चाहते थे, वे चाहते थे कि इस प्रकार की शिक्षा केवल माता-पिता द्वारा दी जाय।

आज के विद्यालयों में सहशिक्षा की व्यवस्था है, अतः इन विद्यालयों में यौन शिक्षा देना आग में घी डालने के समान होगा। इससे चरित्र सुधरने के स्थान पर बिगड़ने की आशंका अधिक है। इस विषय पर महर्षि का मत है कि सहशिक्षा नहीं होनी चाहिए। वे तो यहां तक कहते हैं कि 'कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें।" महर्षि का मत कितना उचित है इसकी परीक्षा हम आये दिन विश्वविद्यालयों में होने वाली घटनाओं से कर सकते हैं।

अतः यदि देश के युवकों का चरित्र सुधारना है तो हमें महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित मार्ग पर चलना होगा। आज के ढंग से शिक्षा देने से युवकों के चरित्र सुधरने की बजाय बिगड़ता ही है। अतः आर्य विद्वानों का कर्तव्य है कि महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित विचारों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था को प्रचलित करने का प्रयास करें।

(पृष्ठ १४ का शेष)

से होंने वाले रोग के रोगी को यह पता नहीं लगता कि रोग कहां से प्रारम्भ हुआ है।

अनेक व्यक्ति मांस भक्षण को मोटे ताजे स्वस्थ रहने का तरीका बताकर विवाद करते हैं। शायद वे उन हानियों को नहीं जानते जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। संसार के बड़े-बड़े बलशाली लोगों का भोजन दूध, शाक, अनाज, तरकारी मेवे आदि रहे हैं।

साधारणतः यह धारणा रहती है कि मांसाहारी अपेक्षाकृत अधिक हृष्ट-पुष्ट होते हैं, परन्तु इनका अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि बाहरी द्रष्टि से स्वस्थ दीखने वाले अधिकतर अस्वस्थ और रोगी होते हैं। रोग सौन्दर्य का विरोधी तत्त्व है। अतः स्वास्थ्य और सौन्दर्य को दृष्टि में रखते हुए मांस भक्षण से परहेज हितकारी है।

मांस का सेवन क्रोध और मनोविकार उत्पन्न करता है। इससे काम वासना प्रदीप्त होती है। इसके सेवन से व्यक्ति का झुकाव शराब की ओर भी हो जाता है। दिमागी काम करने वालों के लिए यह अत्यधिक बुरा है। मांस उपलब्धि का मूल क्रूरता है। इसके सेवन से बहुधा व्यवहार क्रूर होता है।

डा० पोलो ने यह सिद्ध कर दिया है कि जितना दूध, बादाम आदि प्रोटीन खाने पर आमाशय में पाचक रस बनता है, उतना मांस और अण्डे से नहीं। अतः मांसाहार के सभी बहाने गलत हैं। वर्तमान समय में उनका किसी प्रकार का बहाना स्वीकार करने योग्य नहीं है, जबकि अच्छे पौष्टिक और सात्विक पदार्थ खाने को उपलब्ध हो रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

हरियाणा में आर्यसमाज शताब्दी के अवसर पर
हरियाणा के एक लोक कवि और उनका एक गीत

स्वाधीनता संग्राम के इतिहास की एक स्वर्णिम घटना

हमने आर्य समाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर कई पत्र पत्रिकाओं में कई विषयों पर लेखमालाएं आरम्भ कीं। कुछ अब तक भी चल रही हैं। 'नींव के पत्थर' लेखमाला वैदिक धर्म साप्ताहिक उर्दू में छपी। उसमें स्वर्गीय सरदार जसवन्त सिंह वर्मा टोहानवी पर कुछ लेख छपे। स्वर्गीय वर्मा जी का जीवन-चरित्र लिखने व छपवाने का यह सर्वप्रथम प्रयास है। इस निमित्त आर्य समाज के इतिहास की अच्छी खोज हो गई। हरयाणा में आर्य समाज शताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर वर्मा जी के जीवन पर आज फिर कुछ लिखने को जी कर आया।

जब ऋषि का सिंहनाद चतुर्दिक् गूंज रहा था। जब सारा विश्व ऋषि-सन्देश को कान लगाकर सुन रहा था तब १८८१ ई० में टोहाना के सरदार कपूरसिंह जी वर्मा के घर बालक जसवन्त सिंह का जन्म हुआ। वर्मा जी के दो और भाई भी थे। सरदार जय दयाल सिंह और सरदार जयसिंह। श्री जयसिंह को सितार वादन व संगीत का अच्छा ज्ञान था। उन्हीं के प्रभाव से जसवन्त सिंह जी को संगीत में रुचि पैदा हो गई। पढ़ाई में रुचि न थी। प्रायः स्कूल से भाग आया करते थे। पांचवीं छठी कक्षा तक ही पढ़ पाए। तभी कविता का अंकुर भी फूट पड़ा। कुछ-कुछ लिखने लग गये।

१९०४ ई० में टोहाना में आर्य समाज की स्थापना हो गई। जसवन्तसिंह जी के चचेरे भाई भगवन्त सिंह जी समाज के सबसे पहले सदस्यों में से एक थे। अगले वर्ष जयसिंह और जसवन्तसिंह जी भी आर्य समाज में प्रविष्ट हो गये। १९०५ ई०में यह युवक दल लाहौर गया। वहां के आर्य समाज के वार्षिकोत्सव से नई चेतना, धर्म प्रचार के लिए अदम्य उत्साह लेकर ये लोग लौटे। १९०६ ई० में टोहाना में एक शास्त्रार्थ रखा गया। इसी शास्त्रार्थ को सुनकर एक व्यक्ति मुसलमान होते-होते बचा।

वह युवक मुसलमान होने से तो बचा ही, आर्यसमाज के इतिहास में भी उसका नाम हम जैसे सिर फिरे सदा लिया करेंगे। वह था मनसाराम वैदिक तोप। इस नर-नामी की सेवाओं को कौन भुला सकता है? महर्षि दयानन्द जी के पश्चात् पुराणों पर सर्वाधिक मौलिक, रोचक, सरस सुबोध भाषण देने वाले पं. मनसारामजी वैदिक तोप ही थे। यह रत्न टोहाना आर्य समाज की ही देन है।

१९०७ ई० में टोहाना की भजन मण्डली लाहौर के उत्सव पर गई। इस मण्डली में जहां स्वर्गीय ला० देवीदयाल जी गुप्त, महाशय मोहन लालजी गुप्त जाखल और श्री जसवन्त सिंह वर्मा आदि हुआ करते थे वहां टोहना के महाशय मुहनाद असलम भी झूम-झूम कर ऋषि भक्ति के गीत गाते नगर कीर्तन में जाया करते थे।

नगर कीर्तन निकला। एक अद्भुत घटना घटी। सरदार जसवन्तसिंह जी ने अपनी रचनाएं सुनानी आरम्भ कीं। दिल में तड़प थी, जवानी का जोश था। देश धर्म सेवा की उमंग-तरंग उनको चैन न लेने देती थी। उनके गीत सुन-सुन कर देश के सब भागों से आए आर्य लोग फड़क उठे। सहस्रों लाखों दर्शक भी वर्मा जी का एक गीत सुनकर सुध-बुध खो बैठे। सुध-बुध खो बैठे कहें या सुधि में आ गये लिखें? पाठक स्वयं कुछ निर्णय करलें कि क्या हुआ।

लाला लाजपत राय जी के देश से निष्कासन के कारण भी जनता में विक्षोभ और रोष था। सरकार समझती थी कि देश दब जाएगा और आर्य समाजी तो अब लाजपत राय का नाम तक न लेंगे। आर्यसमाज में घुस-पैठिए सदा ही रहे हैं। तब भी थे, अब भी हैं। भीरु तो दबे परन्तु आग्ने पुरुष मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी) के तेजोमय विचारों के कारण आर्य जनता को डराया दबाया न जा सका। जसवन्तसिंह वर्मा ने तबएक गीत गाकर देश और आर्यसमाज के स्वाभिमान का परिचय तो दिया ही साथ ही सरकार को एक खुली चुनौती दे दी। वह गीत राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में भुलाया न जा सकेगा। निष्पक्ष और कृतज्ञ इतिहास लेखक इसकी चर्चा किये बिना अपना ग्रंथ अधूरा ही समझेंगे। वह गीत क्या था? बड़े यत्न से हम उसकी खोज कर पाए हैं।

उनकी इज्जत क्या खाक है,
जिनको पगड़ी दें परदेशी।

यह तराना जब गाया गया तो दर्शकों ने विदेशी वस्त्र की पगड़ियां, विदेशी टोप उतार-उतार कर फेंकने आरम्भ कर दिए। एक दो चार नहीं सैंकड़ों पुरुषों ने पंजाब की राजधानी में सिरों से विदेशी टोपियां टोप और विदेशी कपड़े की पगड़ियां उतार कर फैंक दीं। तब महात्मा गांधी अभी छात्र ही थे। स्वदेशी आन्दोलन अभी कोसों दूर था। राजनीति में तब तक स्वदेशी आन्दोलन

(शेष पृष्ठ २६ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालकों को भीरु न बनाइए !

बाल मन उस कोमल पौधे की भांति है जो कुछ समय पूर्व ही अंकुरित हुआ है खुली वायु में अपनी उनींदी पलकें खोले। पूर्ण जीवन प्राप्त करने तक उसे कई झंझावातों से गुजरना है और उसे माली की उस कुशल संरक्षकता की आवश्यकता है जिसमें वह अपने को आंधी, पानी, तेज धूप, ठण्ड और पाले से बचा सके। बालकों को अपने हित-अहित का बोध नहीं होता। अतः उसका सारा दायित्व माता पिता व परिवार के वयस्क सदस्यों पर आ जाता है।

बालक का मन बड़ा संवेदनशील होता है, जो शीघ्र ही देखी, सुनी बातों का प्रभाव ग्रहण करता है और साथ ही अविकसित भी; जिससे बुरा प्रभाव पड़ने का खतरा भी रहता है। एक मुख्य खतरा बालक के स्वभाव की धारा भीरुता की दिशा में बहने वाली हो जाने का भी है। जो उसे आत्म-विश्वास रहित व कायर बना देती है। यदि बचपन से ही बच्चों के भयभीत न होने का ध्यान रखा जाए, आवश्यक सतर्कता बरती जाये तो बच्चों का स्वाभाविक विकास होता चलेगा। वह निर्भीक और साहसी बन सकेगा जो उसके व्यक्तित्व को समुचित रूप से विकसित करते हुए उसे जीवन संग्राम में विजयी बनायेगा।

बच्चे भयभीत क्यों होते हैं ?

बच्चों को निर्भीक और साहसी बनाने के लिए किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है यह जानने से पूर्व उन कारणों को भी समझना चाहिए जिनसे कि बालक भयभीत होते हैं। बच्चे के लिए सब कुछ अनदेखा व अनजाना ही है। प्रत्येक वस्तु जो उसके सामने आती है—उसकी मानसिक स्थिति की दृष्टि से कहीं अधिक बड़ी होती है। कई बातें उसकी मानसिक अवस्था के इतनी प्रतिकूल होती हैं कि वे उसे विकराल लगती हैं। एक दो साल की आयु के लिये तो सामान्य व्यवहार जगत् की यह दशा है। उन्हें ऐसी वस्तुओं से बचाना ही एकमात्र उपाय है। जोर से बोलने या खिलखिलाकर हंसने के कारण भयभीत हो जाना तो बच्चो के लिए सामान्य है। कई बार डर कर वे बीमार भी पड़ जाते हैं। माताओं को ऐसी बातों से बहुत छोटे बच्चों को बचाना ही चाहिए।

कुछ समझदार होने पर बच्चों के लिए भयंकर वस्तुओं और परिस्थितियों के समाधान के मनोवैज्ञानिक उपाय काम में लाने चाहिए। अधिकांशतः बच्चों में भयभीत होने की प्रवृत्ति इसलिए जन्मती है कि उनके लालन-पालन में कई त्रुटियां रह जाती हैं। प्रायः ये त्रुटियां उतावली व बाल मनोविज्ञान से अज्ञता के कारण ही उत्पन्न होती हैं। जैसे बच्चा किसी कारण से सो नहीं रहा है, ओढ़ायी गयी रजाई को बार-बार हटाये दे रहा है अथवा ऊधम मस्ती कर रहा है तो मातायें उन्हें भूत, चील, कौआ और हौआ का नाम लेकर डराती हैं और बच्चा इन विचित्र बातों को सुनकर चुपचाप मां की छाती से लिपट जाता है। तात्कालिक समाधान की दृष्टि से यह उपाय कितना ही कारगर क्यों न होता हो पर इससे बालक के विकास पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे हौओं से बच्चा यह समझने लगता है कि चील, कौआ कोई चीज है जो उसे खा जायेगी। आगे वह इन बातों की वास्तविकता भले ही समझ जाए परन्तु उस समय बालक के मन पर पड़े भयप्रद संस्कार उसे आजीवन घेरे रहते हैं। कभी वह दिशाशूल से डरता है तो कभी बिल्ली के रास्ता काट जाने से। किसी न किसी रूप में अज्ञात और अजान भय उसे घेरे ही रहता है। भूत प्रेतों की कहानियां सुनाकर उनके नाम से डराये गये बच्चे तो इस बुरी तरह भयभीत देखे जाते हैं कि बड़े होने के बाद भी वे भले ही उच्चा शिक्षा प्राप्त कर लें और बुद्धिजीवी बन जायें, अंधेरे में जाने से पहले कंपकंपाते रहते हैं।

सुनाइए ऐसी कहानियां

भूत प्रेत और यक्ष राक्षसों की कहानियां सुनने सुनाने में तो बड़ी रोचक लगती हैं, पर कोमल अपरिपक्व मस्तिष्क उनके दुष्प्रभावों से भी आक्रान्त हो जाते हैं। दादी, नानी, घर की बड़ी बूढ़ी स्त्रियों तथा माताओं द्वारा जब इस प्रकार की कहानियां सुनायी जाती है तो बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। सर्व समर्थ और जब चाहें अपनी इच्छा से जहां कहीं भी प्रकट होने की क्षमता से सम्पन्न भूत-प्रेतों की कल्पित गाथायें सुनकर बच्चे विस्मय मुग्ध हो जाते हैं। उनकी इतनी कहां सामर्थ्य होती है कि सत्य और कल्पना का नीर क्षीर विवेचन कर सकें।

इन बातों को सुनकर बच्चा अन्धेरे में भी डरने लगता है। रात को किसी कमरे में अकेले रहने का भी साहस नहीं कर पाता। उसने तो जो सुना है तथा अपनी कल्पना शक्ति के अनुसार जितना देखा समझा है वे सभी बातें अंधकार में अथवा रात्रि में तस्वीरें बनकर सामने आती हैं। प्रायः इससे बच्चों को नींद आना भी कठिन हो जाता है। वह थक जाने से सो भी लें तो सपने में उन्हीं तस्वीरों को देखता है। चादर से मुंह ढककर सोने की कोशिश करे तो सांस घुटती है और यदि खोलकर सोये तो असुरक्षा का भय। उसकी हालत ऐसे कबूतर सी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होती है जो बिल्ली को देख आंखें बन्द कर लेता है और स्वयं को सुरक्षित समझता है। आंखें मूंद लेने से कबूतर तो नहीं बच पाता बिल्ली उसे खा ही जायगी पर बालक का भी जीवन भले ही बच जाय पर उसमें जीवन के लिए आवश्यक संजीदगी नहीं आ पाती।

हम ऐसी कहानियां सुनाकर यह सन्तोष भले ही कर ले कि हम बच्चों का मन बहलाव कर रहे हैं पर उनकी स्थिति बिल्ली के सामने कबूतर जैसी हो जाती है। उसका सारा जीवन ही भीरुता तथा कायरता का शिकार हो जाता है। इस भयग्रस्तता का सबसे पहला प्रभाव बच्चे पर यह होता है कि वह दब्बू होने लगता है। भयजनित चिन्ता, निराशा, आशंका व अनुत्साह के कीट उसके जीवन उपवन में लगे पौधों को निर्ममता से चाटने लगते हैं। उसका व्यक्तित्व ही टूट जाता है, बंधे-बंधाये ढर्रे का जीवन जीते हुए उसमें कुछ नया करने की शक्ति नहीं रह जाती।

भयग्रस्त बालकों का दुष्प्रभाव तत्काल उसे आश्रित बना देता है। घर से बाहर निकलने पर उसे किसी का संरक्षण चाहिए, सोते समय पेशाब लगे तो किसी का साथ चाहिए। रात को झींगुर की झांय-झांयसुनकर उसे मां की छाती से चिपट कर सोने या किसी अन्य वयस्क द्वारा थपथपाने की आवश्यकता अनुभव होती है।

असंतुलन ही अपना

भयानक कहानियों का ही इतना बुरा प्रभाव होता है। अन्य बहुत सी बातें भी उसे डरपोक बनाती हैं। मां-बाप समझते हैं बच्चे लाड प्यार से बिगड़ते व डांट फटकार से सुधरते हैं। साथ ही लाड़ प्यार भी आवश्यक लगता है। इसलिए लाड़ प्यार तो करते हैं पर डांट फटकार की मात्रा इतनी बढ़ा देते हैं कि बच्चा अपने प्रति स्नेह और सहानुभूति का जरा भी आभास नहीं कर पाता, प्राय: बच्चों से कोई चीज टूट फूट जाने या कोई गलती हो जाने पर बुरी तरह लताड़ा जाता है। या वह अपने मन से कोई काम करना चाहता है और उसमें माता-पिता को आशंका है कि वह नहीं कर पायेगा तो उसे घुड़का जाता है। भूत प्रेतों की कहानियों का अनजाने में भी प्रयोग हो सकता है पर लगभग सभी अभिभावक जो बच्चों को अपनी आज्ञा मनवाने के लिए बाबा, पुलिसमैन या अपरिचित दाढ़ी वालों को दिखाकर पकड़ ले जाने का अस्त्र चलाते हैं, जिससे बींध कर बच्चा आज्ञा का पालन तो कर लेता है साथ ही इतना डर भी जाता है कि भविष्य में उसके आत्मा को इस सम्बन्ध में ध्यान देना चाहिए। क्योंकि वे ही वह माली हैं जो सारे उपवन की, उपवन के एक-एक फूल पौधे की जिम्मेदारी ले सकती हैं, लिए हुए हैं और लेती रहेंगी।

(पृष्ठ २४ का शेष)

नाम की कोई चर्चा न थी। जसवन्तसिंह कोई बैरिस्टर डाक्टर और राजनेता अभिनेता न थे। वह थे वीर भूमि हरयाणा के एक उदीयमान लोक कवि। वह थे ऋषि दयानन्द के एक सैनिक।

यह कितनी कृतघ्नता है कि उनकी ओजस्वी वाणी के इस चमत्कार की इतिहास लेखक चर्चा न करें। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में यह अपने ढंग की एक ही घटना है। हमारे पास इसका Documentary proof है। स्वर्गीय ला० देवीदयाल जी गुप्त के हाथ से लिखे कुछ पृष्ठ हमारे पास रद्दी में आ गये। उसमें यह सारा वृत्तान्त है। लाला जी उस नगर कीर्तन में टोहाना की मण्डली में थे। इस गीत के कारण सैंकड़ों भाई इसी मण्डली में आ गये। इसी गीत ने जसवन्तसिंह को अखिल भारतीय आकार का व्यक्तित्व दे दिया। देश भर की समाजों ने वहीं उसको निमन्त्रण दे दिये। वहीं लाहौर के उत्सव पर इस गीत के बाद उनके भजन करवाए गये। जसवन्तसिंह जन मन पर छा गया। इस ऐतिहासिक गीत की कुछ पंक्तियां हम यहां देते हैं—

जरा सुनो लगा कर कान हाल कहूं सारा,
अब थोड़ी देर दिख जाए साहूकारा।
नौ पाई रोज में चलता खरच तुम्हारा,
जिस आमदनी पर इतना नाज तुम्हारा।
जो तुम्हें खुशहाल जताते,
फिर तुम भी न शरमाते।
हाए डूब चला यह देश आ गये क्लेश,
छुट गया स्वदेश वस्तु प्रचार।
फिर इसकी उन्नति कैसे ?
जिन्हें पगड़ी दें परदेशी।

यह गीत बहुत लम्बा है। हरयाणा की ठेठ तज पर है। हमारे पुस्तकालय में यह सारा गीत है। वर्मा जी के हिन्दी जीवन चरित्र में देंगे।

यद्यपि वह विद्वान् नहीं थे। लगनशील थे। निडर थे। सीमा प्रान्त में अंग्रेज सरकार के दबाने डराने के सब यत्न विफल हो गये। वर्मा जी वहां अपनी बात कहने से न टले। वहां भी नगर कीर्तन के एक गीत से सरकार थर्रा उठी।

उस ऋषि भक्ति के रंग में रंगे देशभक्त को हमारा प्रणाम।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५

जनरल जोरावरसिंह

—सय्याह सुनामी

रियासी से थोड़ी दूर, चन्द्रभागा नदी के तट पर जोरावरसिंह और उसके साथी ठहर गए। जोरावर हरी घास के एक टुकड़े पर बैठ गया, जिस पर चिनार के एक वृक्ष की छाया पड़ रही थी। उसने अपने साथियों को सम्बोधित करते हुए कहा—

'मैं यहीं ठहरा हुआ हूँ, तुम जाकर पता करो कि राजा गुलाबसिंह रियासी में ही ठहरे हुए हैं या नहीं। यह भी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करना कि वह हमें अपनी सेना में स्थान देगा अथवा नहीं। यदि वह भर्ती करने को तयार हो गया तो लौट कर मुझे सूचित कर देना और फिर हम तीनों जाकर भर्ती हो जाएंगे।'

'परन्तु राजा गुलाबसिंह भी तो महाराजा रणजीतसिंह का ही सामन्त है। यदि उसे हमारे भगोड़े होने की सूचना पहुंच गई तो वह हमें बंदी बनाकर खालसा सेना के पास तो नहीं भिजवा देगा।'

'मेरा अनुमान है कि उसके पास सूचना नहीं पहुँची होगी। परन्तु यदि पहुँच भी गई होगी तब भी वह हमें बंदी बनाकर लाहौर कदापि नहीं भेजेगा। ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।'

वे अभी बातें कर ही रहे थे कि थोड़ी दूरी पर उन्हें किसी व्यक्ति द्वारा ऊँची आवाज में यह वाक्य सुनाई दिया—

'अजी तुम्हारे राजा गुलाबसिंह के न्याय का क्या कहना है? दरबार से रियासी की जागीर तो मिली थी मियां दीवानसिंह को और उस पर अधिकार जमा लिया है उन्होंने! क्या कमाल का न्याय है?'

'यह न्याय ही है भाई! एक रियासी ही क्या सम्पूर्ण जम्मू प्रदेश ही महाराजा गुलाबसिंह के पूर्वजों के राज्यान्तर्गत रहा है। अपनी भूमि को किसी अन्य के अधिकार में जाता देखकर, आगे बढ़कर पहले ही उस पर अधिकार कर लेने में कोई अन्याय नहीं। राजा गुलाबसिंह वीर, साहसी, नीतिज्ञ एवं दूरदर्शी शासक हैं। वे सम्पूर्ण पर्वतांचल को अपने अधिकार में लेकर एकछत्र शासन की स्थापना करना चाहते हैं, जिससे कि उत्तरांचल की स्थिति सुदृढ़ हो सके। इस ओर से देश की सीमाएं सर्वथा सुरक्षित हो जाएँ। तुम इस बात को अच्छा समझते हो या इस बात को कि सभी प्रदेश छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित रहें। दस कोस का स्वामी भी राजा ही कहा जाए और १०० कोस का मालिक भी राजा ही।'

'ये छोटे-छोटे राजा यदि अपने-अपने क्षेत्र में शान्ति-पूर्वक प्रजा के कल्याण के लिए शासन करते रहें तो इसमें हानि भी क्या है?'

'हानि तो कुछ नहीं, किन्तु यह भी सत्य है कि वे किसी विदेशी शत्रु के आक्रमण को न सह सकेंगे। एक कमान में युद्ध न कर सकेंगे। प्राचीन ऋषि मूर्ख न थे, जिन्होंने समग्र राष्ट्र को एक सबल राष्ट्र के रूप में खड़ा करने के लिए अश्वमेध यज्ञों पर जोर दिया था और फिर यह भी तो सही है कि तुम्हारे ये राजे शान्ति-पूर्वक भी तो शासन नहीं चलाते। एक दूसरे से द्वेष व शत्रु भावना रखते हैं और परस्पर लड़ते रहते हैं। दूर न जाओ, तुम्हारे डोगरा राजा अजीतसिंह अपनी रानी बिन्द्राल के साथ ही षड्यन्त्र चलाते थे। राजा रानी की इस खींचातानी को देखकर ही महाराजा रणजीतसिंह ने भाईहाकिम सिंह को भेजकर जम्मू पर अधिकार करलिया। जिसमें हमारा युवक राजा गुलाबसिंह रणजीतसिंह की सेनाओं के विरुद्ध जी तोड़ कर लड़ा था। लाहौर दरबार की ओर से राजकुमार खड़कसिंह यहाँ का सूबेदार नियुक्त हुआ तो रानी बिंद्राल ने उसे अपने प्रेम का बन्दी बना लिया। रानी के श्वसुर के भाई मियाँ मोटासिंह ने इसका बुरा मनाया, तो वह उसके भी विरुद्ध हो गई। यद्यपि महाराजा रणजीतसिंह ने कहला भेजा था कि राज्य प्रबंध मोटासिंह के साथ मिलकर किया जाए, जिस पर खड़कसिंह को बुलवाकर उसके स्थान पर अजीतसिंह गुजराती को नियुक्त किया, किन्तु रानी ने उस पर डोरे डाले और उसने षड्यन्त्र रच कर दो नौकरों जाडू और सन्तू के द्वारा मियाँ मोटासिंह का बध करा दिया। क्या इस चक्र के चलते प्रदेश का राज्य-प्रबन्ध व्यवस्थित हो सकता है और प्रजा-जन सुखी रह सकते हैं।'

'प्रजा तो भाई! अब तुम्हारे राजा गुलाबसिंह के शासन काल में ही सुखी होगी।'

'क्यों नहीं यह राजा गुलाबसिंह ही थे कि जिन्होंने मियाँ मोटा सिंह के इन दोनों हत्यारों को लाहौर में भाटी द्वार के बाहर घेरा और तत्काल मौत के घाट उतार दिया।'

'तुम्हारे राजा ने महाराजा रणजीतसिंह को अपनी पट्टी पर चढ़ा रखा है, नहीं तो यदि कोई अन्य ऐसा कृत्य करता तो बंदी-गृह में पड़ा होता। पता नहीं इन्होंने महाराजा पर क्या जादू की लकड़ी घुमा रखी है।'

'महाराजा रणजीत सिंह वीरों और नीतिज्ञों का आदर करते हैं। तुम देख लेना कोई दिन ही जा रहा है कि सम्पूर्ण जम्मू ही राजा गुलाबसिंह के नियन्त्रण में आ जाएगा। वह है भी तो उनके पूर्वजों का ही क्षेत्र।'

'भई! तुम्हें राजा गुलाबसिंह ने ऐसी कौन-सी जागीर प्रदान कर दी है कि तुम उसकी प्रशंसा में मुँह से झाग छोड़ रहे हो।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'झाग तो तुम्हारे ही मुख से झड़ रहे हैं, तनिक दर्पण में जाकर अपना मुखड़ा निहार लो।'

'मुँह सम्भाल कर बात करो, नहीं तो मियां दीवान सिंह और तुम्हारा गुलाबसिंह तो लड़ते ही लड़ेंगे, पहले मुझ में और तुम में लाठियां चल जाएंगी।'

जोरावरसिंह ने आगे बढ़कर कहा 'शान्ति रखो, क्यों आपस में सिर फुटव्वल करते हो भैया!'

राजा गुलाबसिंह के पक्षपाती ने जोरावर और उसके साथियों की ओर देखा और बोला 'यहां तो आजकल सिर फुटव्वल का ही राज्य है। राजा सिर फुटव्वल करते हैं, राज्य अधिकारी भी ऐसा ही करते हैं, नौकर-चाकर, दास दासियों तक में यही रोग व्याप्त है। पनघट पर जल भरने को आई स्त्रियां भी इस रोग से मुक्त नहीं। यहां तक कि मिट्टी के बर्तन घाट के पत्थरों की आपस में ही सिर फुटव्वल कर लेते हैं और टुकड़े-टुकड़े होकर कंकड़ बन जाते हैं।'

'और तुमने यह नहीं बताया,' उसका प्रतिद्वन्द्वी बोला 'कि तुम जैसे मुफ्त के समर्थक प्रत्येक समय दूसरों से सिर फुटव्वल करने के लिए तत्पर रहते हैं।'

'चलो छोड़ो!' जोरावरसिंह बोला 'और यह बताओ कि आप दोनों में से कौन हम पर यह कृपा कर सकते हैं कि हमारे लिए थोड़े से भोजन की व्यवस्था कर दें। हम बड़ी दूर से यात्रा करते आ रहे हैं और हमारे पास की खाद्य सामग्री समाप्त हो चुकी है।'

'रियासी में किस कार्य से आते हैं आप?' राजा गुलाबसिंह का विरोधी बोला।

उसके प्रतिद्वन्द्वी ने उन्हें उत्तर देने का अवकाश न देते हुए कहा, 'आपने चाहे किसी के यहां भी जाना हो। मैं आपके लिए भोजन लाए देता हूं। मेरे घर में जसा भी भला बुरा होगा ले आऊँगा। परन्तु क्या यह उचित न होगा कि आप लोग मेरी कुटिया पर चलकर ही जो कुछ रूखा-सूखा उपलब्ध हो ग्रहण कर लें। आप अतिथियों की यथासामर्थ्य सेवा करने में हमें हर्ष ही होगा।'

दूसरा बोला 'अरे, इन्हें अपने घर क्यों ले जाता है, राजा गुलाबसिंह के लंगर में ले जा, जिसकी प्रशंसा में तू धरती आकाश के कुलाबे मिला रहा है।'

'तुम्हारी बातों में आकर साधारण पथिकों को मैं राजा के लंगर में ले जाऊँ, इतना मूर्ख मैं नहीं हूँ। फिर वह लंगर कोई सदाव्रत तो नहीं है वहां तो राजा ने अपने नौकरों व सैनिकों के लिए ही भोजन की व्यवस्था की है।'

वह व्यक्ति जोरावरसिंह एवं उसके साथियों को लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा। अभी ये थोड़ी-सी ही दूर पहुँचे होंगे कि उन्हें 'छनाक' सा शब्द सुनाई दिया। ऐसा लगता था कि किसी थैली में से अनेक सिक्के निकल कर पत्थर पर गिरे हैं।

'यह क्या?' वह व्यक्ति चौंक कर पीछे की ओर देखने लगा।

'चलो चलकर देखें!' जोरावरसिंह का चित्त भी कुछ चंचल सा हो उठा।

वह व्यक्ति झुककर शीघ्र ही धरती पर से कुछ चुनने सा लगा। उनके वहाँ पहुँचने तक वह व्यक्ति उन्हें बीन चुका था।

'यह रुपये कैसे गिरे थे?' उसके प्रतिद्वन्द्वी ने पूछा।

'कैसे रुपए?'

'हमने कुछ सिक्के के गिरने का शब्द सुना था।'

वह व्यक्ति और जोरावरसिंह आस-पास की धरती पर कुछ ढूंढ़ने लगे। एक पत्थर की ओट में उसे सोने का एक सिक्का पड़ा मिल गया और सोने के दो सिक्के जोरावर सिंह को भी नदी के तट के समीप ही उगी हुई एक झाड़ी के नीचे पड़े हुए मिल गए।

'मोहरें!'

'हाँ, परन्तु न तो ये डोगरा राज्यों की हैं न मुगल शासन काल की। न ही पंजाब की नानक शाही टकसाल की ही हैं।'

'फिर ये पुरानी भी नहीं अपितु नई हैं।' वह इधर उधर खोजने लगा। अब जोरावरसिंह के दोनों साथी भी खोज में उनके साथ मिल गए। उनमें से भी एक को एक मोहर मिल गयी। वे बड़बड़ाए 'ऐसा लगता है कि किसी प्रेत अथवा परी ने यहाँ मोहरों की वर्षा कर दी है।'

वह व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्द्वी को सम्बोधित करते हुए बोला 'सिद्धिचन्द! बताओ कि ये स्वर्ण मुद्राएं कहाँ से आई हैं।'

'मुझे क्या पता भाई कि कहाँ से आई हैं।'

'ये तो विदेशी हैं। लद्दाखी अथवा चीनी सी लगती हैं।'

'होंगी! तुम्हें परख हो सकती है। मैंने तो जीवन भर स्वर्ण मुद्राओं की सूरत कभी नहीं देखी।'

'इसीलिए तो पूछता हूं कि ये तुम्हारे पास कहाँ से आ गई।'

'मेरे पास!' सिद्धिचन्द के मुख पर हवाइयां उड़ने लगी थीं। 'मेरे पास कहाँ से आनी थीं। वह जो पक्षी··· क्या कहते हैं उसे! हां चील, यह सोने पर बहुत मरती है। सुनते हैं कि जब तक यह अपने बच्चों की आँखों में सोना न छुआए वे नहीं खुलतीं। क्या पता कोई चील ही इन्हें किसी सेठ साहूकार की छत आदि पर से उठा लाई हो। ये सुन्दर स्थानों से भी तो उड़ती हुई यहाँ आ सकती हैं।'

'चील! सिद्धिचन्द! तू चतुर और चालाक तो है। यह तो मैं स्वीकार भी करता हूँ। परन्तु इस प्रकार हमारी आँखों में धूल झोंकने का प्रयास न कर। मैं सीजल देवता (पर्वत मालाओं का एक देवता) की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि ये सिक्के तुम्हारे पास से ही गिरे थे। जिनमें से अधिकतर तुमने उठाकर अपने कपड़ों में छिपा लिए हैं। क्योंकि तुम एक निर्धन व्यक्ति हो और अभी तुमने स्वयं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वीकार भी किया ही है। अतः प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ये स्वर्ण मुद्राएं तुम्हारे पास आईं कहां से ?'

सिद्धिचन्द जो एक क्षण के लिए घबरा गया था, साहस संजोते हुए बोला 'राजा गुलाबसिंह का अकारण समर्थन और गुणगान करते-करते तुम्हारी यह स्थिति हो गई है कि तुम्हें एक के दो-दो दिखाई देने लगे हैं। मैं तो कह रहा हूँ कि मुझे इन या उन स्वर्ण मुद्राओं की कोई जानकारी नहीं है परन्तु तुम हो कि झगड़ालुओं के समान व्यर्थ का वितण्डावाद खड़ा कर रहे हो।'

'जी चाहता है कि तुम्हारी जेबों आदि की तलाशी लूं। और स्वर्ण मुद्राएं तुम से छीनकर दुर्गनायक के समक्ष प्रस्तुत कर दूं।'

'मुझे कुछ पता नहीं, बिलकुल नहीं! बनावटी क्रोध का प्रदर्शन करते हुए सिद्धिचन्द बोल उठा। फिर वह ऊँचे स्वर में बोला 'तुम मेरी तलाशी लेने वाले हो कौन? मैं हूं कि शान्ति और धीरज से बात कर रहा हूं और तुम तो जूतियों समेत ही सिर पर चढ़े आ रहे हो। सावधान जो मेरे विषय में अनाप-अनाप कुछ कहा। जाओ अपना रास्ता पकड़ो। अन्यथा याद रखना कि मेरा या तुम्हारा दोनों में से किसी एक का शव यहीं लुढ़कता दृष्टिगोचर होगा।'

'यह धमकी!' वह व्यक्ति लाठी लेकर सिद्धिचन्द की ओर बढ़ा और उधर सिद्धिचन्द ने भी लाठी संभाल ली। जोरावर सिंह अपने आतिथेय को रोकता हुआ बोला 'इधर आओ मेरे साथ। मैं तुम्हें आगे चल कर बताता हूं। और वह उसका हाथ पकड़ कर बस्ती की ओर ले चला। जोरावर के दोनों साथी भी बोल उठे 'बात अवश्य ही कुछ रहस्यपूर्ण लगती है।'

'अवश्य ही श्रीमान्! अन्यथा इस कंगाल के पास इतनी स्वर्ण मुद्राएं भला कहां से आ गईं।'

जोरावर कुछ सोचता जा रहा था। उसका ध्यान कहीं दूर पहुंचा हुआ प्रतीत होता था।

घर पहुंचने पर उस व्यक्ति ने अपने अतिथियों को भोजन कराया। फिर उनकेलिए चारपाइयों और बिस्तर की व्यवस्था कर उन्हें एक कोठरी लिटा में दिया। जोरावरसिंह के साथियों को तो पड़ते ही नींद आ गई किन्तु जोरावर की नींद तो मानो उड़ ही चुकी थी। थकान होने पर भी किसी गहन चिन्ता ने नींद को उससे दूर भगाया हुआ था। कुछ देर तक लेटने के उपरांत वह उठकर खड़ा हो गया और बाहर आंगन में आ गया। जहां गृह-स्वामिनी एक फटे हुए से कम्बल को रफू कर रही थी और वह व्यक्ति बैठा नारियल गुड़गुड़ा रहा था।

'आइए!'

'आप किसी आवश्यक कार्य में तो नहीं।'

'किंचित्-मात्र भी नहीं।'

'तो आइए थोड़ी दूर तक टहल ही आएं।'

'चलो! यदि आप न आते तो मैं स्वयं ही किसी ओर घूमने को निकल जाता। आज न जाने क्यों मेरा चित्त कुछ उद्विग्न सा हो रहा है।'

वे घर से बाहर निकल आए। जोरावरसिंह बोला, 'पहले आप अपना शुभ नाम तो बता दीजिए, जिससे कि वार्तालाप में सुविधा हो।'

'मुझे ध्यानचन्द कहते हैं।'

'ठीक! और मेरा नाम है जोरावरसिंह।'

'बड़ा सुन्दर नाम है आपका। हमारे राजा गुलाब सिंह के पितामह का नाम भी जोरावर सिंह ही था। अच्छा अब यह तो बताइए कि किधर चला जाए।'

'चन्द्रभागा के तट पर ही चले चलते हैं। परन्तु उस स्थान पर नहीं जहां सिद्धिचन्द हमें मिला था।'

वे चन्द्रभामा के तट पर पहुंच गये और हरी घास में जा बैठे। 'क्यों भला यह व्यक्ति सिद्धिचन्द कैसा आदमी है आपकी दृष्टि में।' जोरावर ने पूछा।

'पूर्णतः धूर्त्त और काइयां। धोखा और धूर्त्तता तो कोई इससे सीखे।'

'क्या काम करता है यह?'

'सब प्रकार का काला धन्धा।'

'यह किसी पर्वतीय राजा का नातेदार तो नहीं। जुगरी के शासक मियां डीडू अथवा दीवानसिंह का, जो राजा गुलाबसिंह के विरोधी हैं।'

'जहां तक मुझे पता है किसी राज्य अथवा राजा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। बस यह इनका स्वभाव ही है कि जिसके समर्थन पर उतर आये प्रशंसा के पुल बांध दे और जिसकी निंदा पर लग जाए उसकी सात पीढ़ियों तक का बखान कर दे। राजाओं और रईसों ही नहीं अपितु नगरवासियों तक के मामले में इसका यही रवैया है। इसी कारण इसको कोई भी मुँह नहीं लगाता।'

'क्या इस बस्ती में यदा-कदा चीनी या तिब्बती भी आ जाते हैं।'

'चीनी तो मेरे विचार से नहीं आते किन्तु लद्दाखी और तिब्बती कभी-कभी अवश्य ही आते हैं।'

'क्या इनमें से किसी का परिचित यह सिद्धिचन्द भी है।'

'हां, मैं समझता हूं कि है।'

'भला कैसे आपका यह अनुमान है?'

'वह इस प्रकार कि पिछले दिनों जब हम भगवती के दर्शनार्थ गए थे तो मेले में कुछ तिब्बती व लद्दाखी भी आए हुए थे। मैंने इसे उनके साथ वार्त्तालाप करते हुए देखा था। हां! याद आया…! यहां के श्मशान में एक अघोरी साधु रहता है, बड़ी भयानक आकृति है उसकी। पता नहीं वह कहां का निवासी है किन्तु जम्मू क्षेत्र का तो निश्चित रूप से नहीं है। पता नहीं वह क्या तंत्र-मंत्र करता रहता है। मांस मदिरा का भी सेवन करता है। क्या पता कि मानव मांस का भी भक्षण कर लेता हो। इन अघोरियों का क्या भरोसा।'

'आप उस अघोरी की चर्चा कहां से बीच में ले आए।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'इसलिए कि इसके पास कभी-कभी तिब्बती और लद्दाखी लामा भी आकर ठहरते हैं।'

'और इस साधु के पास सिद्धिचन्द का भी आना-जाना है।'

'यही मैं कहने लगा था कि सिद्धिचन्द प्रायः उस अघोरी साधु के पास जाया करता है।'

जोरावरसिंह चिन्तन की गहराइयों में डूब गया। वह आश्चर्य सहित कुछ समय तक चुपचाप बैठा विचार करता रहा। तदुपरान्त बोला, 'क्यों भला ! आपके विचार में वे स्वर्ण मुद्राएं सिद्धिचन्द के पास से ही मिली थीं ?'

'और क्या ?'

'किन्तु वह जो कहता था कि उन्हें कोई चील उठा लाई होगी और उड़ते-उड़ते उसके पंजों से निकल कर वे धरती पर आ गिरी होंगी। इस कथन के संबंध में आपका क्या मत है ?'

'बकता है, वह पाखंडी। क्योंकि हम तुरन्त ही वहां जा पहुंचे। अतः शीघ्रता में कोई दूसरों को चलाने वाली बात न बना सका। इसलिए यही बात कह दी। मेरी आयु भी तीस वर्ष से अधिक की हो गई, मैंने तो कभी न ऐसी बात सुनी है और न देखी। किसी ऐसी चील के तो कभी दर्शन नहीं हो पाए कि जो लोगों को स्वर्ण-मुद्राएं बरसाती फिरती हो। लगता है कि यह चोरी का माल होगा।'

'क्या आपको कुछ जानकारी है कि यह सिद्धिचन्द श्मशान भूमि में रहने वाले साधु के पास क्या करने जाता है ? और वे लामा उस अघोरी के पास क्यों आया करते हैं ?'

'लामा तो स्वयं भी अघोरियों के समान ही तंत्र-मंत्र का चक्र चलाते हैं। इसीलिए वे इस साधु के पास आते होंगे और क्योंकि यह सिद्धिचन्द कुछ सनकी-सा व्यक्ति है, अतः हो सकता है कि यह उनके चमत्कार देखने की लालसा से वहां जाता हो, या फिर यह भी हो सकता है कि गांजा, सुल्फा आदि का दम लगाने वहां जा विराजता हो।'

'क्या सिद्धिचन्द का उस अघोरी और लामाओं के पास जाने का और भी कोई कारण हो सकता है ?

'और क्या कारण हो सकता है भला ?'

'तनिक इस प्रश्न पर उन स्वर्ण-मुद्राओं के मामले को मिलाकर विचार कीजिए। यद्यपि हमें पता नहीं, परन्तु सम्भव है कि वे स्वर्ण मुद्राएं तिब्बत या लद्दाख की ही हों।'

'ध्यानचन्द टुकर-टुकर जोरावर के मुख की ओर ताकने लगा। मानो कि उसका मस्तिष्क इस मामले में किसी रहस्य की सत्यता को स्वीकार करने से इन्कार कर रहा हो। 'क्या अभिप्राय है आपका ?'

जोरावरसिंह बोला 'क्या यह सम्भव नहीं हो सकता कि तन्त्र-मन्त्र तो केवल कहानी ही हो और ये लामा तिब्बती और लद्दाखी गुप्तचर ही हों। यह भी तो हो सकता है कि मरघट में बनी हुई कथित अघोरी साधु की वह कुटिया वस्तुतः इन गुप्तचरों का ही एक अड्डा हो। जहां ठहर कर वे जम्मू, कश्मीर और पंजाब की सैनिक गतिविधियों के सम्बन्ध में सूचनाएं संग्रहीत करते हों और अपने राज्यों को पहुंचाते हों।'

अब ध्यानचन्द की आंखों से एक पट्टी सी उतरने लगी और वह भी सोचने लगा कि हो सकता है कि सिद्धिचन्द उनसे स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त कर उन्हें सैनिक गतिविधियों सम्बन्धी जानकारी प्रदान करता हो। अन्यथा उसके पास इतने कीमती सिक्के आए कहां से हैं।

वह बोला 'जोरावरसिंह जी, आपकी कल्पना में सार हो सकता है। यदि यह बात हो तो यह तो बहुत बड़ा देश-द्रोह है। जिसके लिए वह अघोरी साधु और सिद्धिचन्द दोनों ही दोषी हैं। वस्तुतः इस मामले में पूरी छानबीन करनी ही उचित होगी।'

'परन्तु अभी नहीं।' हम लोग तो अभी राजा गुलाबसिंह की सेना में भर्ती होने आए हैं। क्योंकि हमारी दृष्टि में वही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो शक्तिशाली राज्य का निर्माण कर संभावित संकटों का सफलता से सामना कर सकते हैं।

'अब मैं यहां से लौटकर अपने साथियों समेत राजा गुलाबसिंह की छावनी में जाऊंगा। मुझे आशा है कि हमें नौकर रख लिया जाएगा। इसके पश्चात् मैं प्रयत्न करूंगा कि वह मुझे यहां ही नियुक्त कर दें। यदि मुझे यहां ही लगा दिया गया तो फिर इस बात की पूरी-पूरी खोज निकाली जाएगी। यदि इस मामले का पता लगाने के लिए छुट्टी लेना आवश्यक हुआ तो मैं वैसा भी करूंगा। इस मामले की पूरी खोज लगाने के लिए मुझे बाहर जाने में भी आपत्ति नहीं होगी। क्योंकि उस कार्य को तो सैनिक न होते हुए एक राष्ट्रभक्त नागरिक के नाते भी करना आवश्यक है।'

'अवश्य !'

तभी एक बड़ा सा मेंढक उछला और ग्रुड्प शब्द के साथ पानी में गिरा। दोनों इस प्रकार चौंके जैसे कि किसी व्यक्ति ने आत्महत्या के लिए पानी में छलांग लगाई हो।

(क्रमशः)

वेदभाष्य का वितरण

अब केवल सूर्यनगर कार्यालय से ही हो रहा है। सारे रजिस्टर और रिकार्ड वहीं हैं।

कृपया वहीं पत्र लिखें या सम्पर्क करें।

प्रबन्धक—वेद भाष्य कार्यालय, ३३७-ए सूर्यनगर

P. O. चिकम्बरपुर, दिल्ली-११००३२

फोन—२०१५८४

यह स्थान विवेक विहार के निकट है —दिल्ली-गाजियाबाद चुंगी बार्डर से दक्षिण की ओर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(शेष पृष्ठ २२ का)

इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या विज्ञान साकार ईश्वर-वाद का निराकरण करता है। प्रो० V. D. Kohni F. R. S, D. Sc., LL.D, F. C. S. नामक वैज्ञानिक ने उत्तर दिया —

"I think it does assuming the personal God to have human attitude."

अर्थात् मेरे विचार में विज्ञान साकार ईश्वरवाद का निराकरण करता है, यदि उसका अर्थ यह है कि ईश्वर मनुष्य के समान (राग-द्वेष, सुख-दुःखादियुक्त) है। इसी प्रकार का उत्तर देते हुए उस समय न्यूजीलैंड यूनिवर्सिटी के कौण्टर्करी कालेज के प्रो० सी एस. फादर F. R. S, D Sc.—भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर ने लिखा—

"The idea of a personal God as thought by Jesus Chrest would seem to be very different from the conception of scientific men. I see no realisation of the stupendous significance which must be to the power behind the universe in Jesus's teachings of the church today."

अर्थात् ईसामसीह ने ईश्वर के व्यक्तित्व विषयक जो विचार दिया वह वैज्ञानिकों के विचार से सर्वथा भिन्न है। मुझे ईसामसीह और वर्तमान चर्च की शिक्षाओं में जगत् के पीछे काम कर रही उस महाशक्ति के अत्यधिक महत्व का अनुभव नहीं प्रतीत होता।"

ऐसे ही अन्य अनेक वैज्ञानिकों ने बाइबिल इत्यादि में प्रतिपादित साकार, ससीम ईश्वर की सत्ता से इन्कार किया—सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् जगत्कर्ता परमेश्वर की सत्ता मात्र से नहीं।

कई लोग यह समझते हैं कि क्योंकि अनेक वैज्ञानिक (सब नहीं) विकासवाद मानते हैं अतः वे ईश्वरवाद से इन्कार करते हैं। वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या आपके विचार में विकासवाद में विश्वास में विश्वास जगत् कर्तृत्व में विश्वास का सर्वथा विरोधी है, एक रसायनशाला के प्रोफेसर ने उत्तर दिया—"यदि ईश्वर से तात्पर्य बाइबिल के जेनेसिस (Genesis) में प्रतिपादित साकार ईश्वर के व्यक्तित्व से न होकर सारे जगत् की बनाने वाली कर्त्री शक्ति से हो तो इसका विकासवाद से कोई विरोध नहीं, बल्कि ठीक इससे विरोधी बात है।

इसी बात का विश्वास करते हुए हेनरी ड्रमण्ड नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ने लिखा है—"Evolutiou shows God everywhere." अर्थात् विकास सर्वत्र ईश्वर को दिखाता है।

अतः यह विचार भी अशुद्ध है कि कुछ वैज्ञानिक जो विकासवाद को मानते हैं वे सभी अनीश्वरवादी वा नास्तिक हैं।

वस्तुतः आर्य समाज के द्वितीय नियम में प्रतिपादित ईश्वरवाद विज्ञान और तर्कसम्मत है, जिसमें ईश्वर का निरूपण इस प्रकार किया गया है—

"ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करना योग्य है।

हर्ष का विषय है कि विज्ञान अब तेजी से वैदिक ईश्वरवाद को समर्थन दे रहा है। वह समय दूर नहीं है जब विज्ञान और ईश्वरवाद का सुखद समन्वय 'वैदिक ईश्वरवाद' के महत्व का डिण्डिम घोष करता हुआ मानव की सुख-शान्ति के अजस्र स्रोतों को खोल देगा।

संस्थान के नए प्रकाशन

१. आर्याभिविनय

काव्यमय व्याख्या सजिल्द २.५०

अजिल्द १.५०।

२. वैदिक गृहस्थाश्रम : सजिल्द

पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड

मूल्य ६ रु०

३. वैदिक गीता (पद्यानुवाद)

मूल्य १ रु०

४. दयानन्द चित्रदर्शन

मूल्य २० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

अभी मूल्य १५ रु०

५. संस्कार विधिः

राज संस्करण बड़ा साइज, कपड़े की जिल्द

मूल्य ६ रु०

सादी जिल्द, मूल्य ५ रु०

शीघ्र मंगाइए

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य परिवार

आर्य समाज मन्दिर अल्मोड़ा में आदर्श विवाह

आर्य समाज मन्दिर अल्मोड़ा में प्रधानाचार्य श्री गुलाब भाई नगीन भाई पटेल (ग्राम वुडिया, जिला सूरत, गुजरात प्रांत) का विवाह संस्कार कु० पुष्पा बहिन, नाथू भाई चौधरी (ग्रामवेडिछा, जिला सूरत, गुजरात प्रांत) के साथ डा० ज्ञान प्रकाश शास्त्री 'कच्चाहारी' के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। उक्त संस्कार के देखने के लिए अंग्रेज दर्शक भी पधारे। आर्य समाज के प्रधान श्री मथुरालाल ने नवदम्पती को आशीर्वाद दिया तथा उपमंत्री श्री सिंह ने वैदिक साहित्य भेंट किया।

वैदिक सत्संग मंडल नजीबाबाद का प्रथम वार्षिकोत्सव

वैदिक सत्संग मण्डल नजीबाबाद का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक २७, २८ मई को हुआ, जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री हरिसिंह, श्रीमती कान्ता कुमारी (संगीताचार्या), श्री मुखराम कल्याण सिंह जी भजनोपदेशक, श्री आनन्द प्रकाश जी आर्य आदि पधारे।

चुनाव

आर्य समाज वल्लभगढ़ के निर्वाचन में प्रधान श्री हुकम चन्द, उप प्रधान श्री बाबू राम, मंत्री श्री अशोक कुमार मित्तल, उप मंत्री श्री राज किशोर, कोषाध्यक्ष श्री ऋषि लाल, पुस्तकाध्यक्ष श्री रवीन्द्र कुमार वोहरा, ८ प्रबन्धक श्री रामावतार गुप्ता चुने गए।

—आर्य समाज रानी का तालाब फीरोजपुर शहर का वार्षिक चुनाव निम्नलिखित हुआ—

संरक्षक डाक्टर साधु चन्द, प्रधान महाशय मदन जित् आर्य, उप प्रधान श्री हवन लाल महता, श्री शिवनंदनलाल मंत्री महाशय मोहन लाल, उपमंत्री श्री संत कुमार, व श्री दिल सुख राम, कोषाध्यक्ष प्रो० जगदीश चंद्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री मनोहर लाल, निरीक्षक श्री अमृत लाल।

आर्य समाज रानी का तालाब फीरोजपुर शहर अपने भूतपूर्व उपप्रधान श्री बरकत राम जी का अफसोसनाक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करता है और इनकी आत्मा की सद्गती के लिए प्रार्थना करता है। लाला जी पुरुषार्थी और समाज हितैषी सज्जन थे। परमात्मा करे उनके सुपुत्र श्री मुनि लाल, अमृत लाल, संत कुमार के अंदर आर्य समाज के लिए वही प्रेम बना रहे।

—आर्य समाज मुजफ्फरपुर का ५३वाँ वार्षिक-महोत्सव ६ मई से ९ मई तक बड़े उत्साह से सम्पन्न हुआ। ९ मई को वेद सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए बिहार विश्व विद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० जयवंत मिश्र ने बताया कि मनुष्य वेद की शिक्षाओं से सुखी कैसे रहेगा। स्वामी आत्मानंद तीर्थ ने स्पष्ट किया कि सर्ग के आदि में ऋषियों पर वेद किस प्रकार प्रकट हुए। आचार्य रामानंद शास्त्री, पं० गंगाधर शास्त्री आदि के भी भाषण हुए।

आर्य समाज के मंत्री प्रो० ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी ने महोत्सव की सफलता में सहायक सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

—आर्य समाज रामपुर का ७८वाँ वार्षिकोत्सव दि० २८, २९ व ३० मई को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य अमर स्वामी जी महाराज, महोपदेशक पं० बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ, बहिन प्रज्ञा देवी जी व्याकरणाचार्य तथा भजनोपदेशक पं० शोभाराम जी "प्रेमी" और पं० विद्या शंकर जी पधारे।

आर्य श्रेष्ठी आस्वानी जी का निधन

गुजरात के सुप्रसिद्ध आर्य श्रेष्ठी सूरत निवासी सेठ श्री चैतन्यदेवजी आस्वानी का दिनांक ४ मई को बम्बई में दिल की बीमारी के दौरे से दुःखद अवसान हो गया है।

वे अपने एक-मात्र सुपुत्र प्रकाश कुमार का विवाह संस्कार (जो कि दुबई में सम्पन्न होने वाला था) करवाने के लिए वैदिक मिशनरी डा० दिलीप वेदालंकार एवम् अन्य परिवार जनों को वायुयान द्वारा साथ ले जाने की तैयारी में संलग्न थे। उक्त प्रसंग पर दुबई में एवम् अन्य समीपस्थ देशों में वैदिक धर्म के प्रचार का आयोजन भी उन्होंने कर रखा था। उनके आकस्मिक निधन से यह कार्यक्रम तत्काल स्थगित कर दिया गया है।

श्री आस्वानी जी स्वाधीनता-आंदोलन में जेल भी गये थे। वे सिन्ध में "मांझन" के गांधी के नाम से मशहूर थे।

वैदिक धर्म एवम् आर्य समाज के प्रति उनके मनमें अनन्य श्रद्धा थे। वैदिक साहित्य के प्रचार के लिए वह सदैव तत्पर रहते थे।

निर्वाचन

—आर्य समाज लातूर (उस्मानाबाद) महाराष्ट्र के निर्वाचन में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान डा० चंद्रभानु वेदालंकार, उपप्रधान डा० हरिश्चंद्र धर्माधिकारी, मंत्री वैद्य महादेव आयुर्वेदाचार्य, उपमंत्री श्री मंगलदेव आर्य, कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर, पुस्तकाध्यक्ष श्री रघुनाथ राव वेद पाठक।

—आर्य समाज आदर्शनगर (जयपुर) एवम् अधीनस्थ संस्थाओं के निर्वाचन में श्री राम दत्ता मल प्रधान, श्री रामलाल व श्री पृथ्वीराज उप प्रधान, श्री रामजी दास मंत्री, श्री ओम् प्रकाश उप मंत्री, श्री भमर मल पुस्तकाध्यक्ष तथा श्री अन्तर चंद कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सुभाष नगर कालोनी ग्वालियर में नवीन आर्य समाज की स्थापना पं० महेन्द्र पाल शास्त्री के निवास स्थान पर की गई। समाज के संयोजक श्री हर पाल सिंह हैं। इस समाज ने क्षेत्र भर में नित्य प्रचार की योजना बनाई है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कथनी करनी की एकता देखकर स्वतः आशीर्वाद

सौ० राकेश रानी तथा चि०

भारतेन्द्र नाथ जी सुखी रहो !

प्रायः दोनों का परिश्रम, धर्म परायण, गुरु दयानंद भक्ति तथा कथनी करनी की एकता देखकर हृदय से आप दोनों के प्रति आशीर्वाद स्वतः निकल रहा है। वेद भाष्य का अन्तिम खंड भी प्राप्त हो गया है। प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। प्रभु का वरद हस्त सदा बना रहे। ऐसी मेरी शुभाकांक्षा है। जनज्ञान मासिक जहां उत्तम था वहां साप्ताहिक उससे भी बढ़कर अत्युत्तम नियम पूर्वक प्राप्त हो रहा है और मासिक भी मिला; वह भी पुराना गौरव लिए हुए है।

मेरा सुझाव है कि प्रति सप्ताह एक शिक्षादायक कहानी हो, बाल पृष्ठ भी हो। नारी जगत् में पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद जी की गृहस्थ सम्बन्धी पुस्तक से सहायता लें।

संस्कारों की महत्ता तथा क्रमशः एक-एक संस्कार की व्याख्या भी प्रस्तुत की जाए। औषधियों का वर्णन प्रति सप्ताह किया जाए……।

आपके सम्पूर्ण परिवार के लिए शुभकामनाएं।

मदनजित् आर्य,
फीरोजपुर शहर

सत् सामग्री से मन हर्ष सागर में तरंगित

परम कर्तव्य निष्ठ भाई भारतेन्द्रनाथ जी,

सत्याः सन्तु ते कामाः

जनज्ञान साप्ताहिक (अंक २८ मार्च, १६७६) मुझे पढ़ने को मिला। जनज्ञान की सत् सामग्री देखकर मन हर्ष के सागर में तरंगित हो उठा। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आपकी सभी इच्छायें पूर्ण हों।

व्रतानंद वानप्रस्थी
वैदिक सेवाश्रम गुरुकुल
पो० गौरौला, अलीगढ़

उपयोगी सामग्री

श्रीमान् भारतेन्द्रनाथ जी, नमस्ते !

आपके द्वारा भेजा गया जन ज्ञान का २ मई का अंक प्राप्त हुआ, जिसमें कि लेख था, 'आर्य समाज से प्यार है क्या ?' लेख बड़ा ही शिक्षाप्रद रहा। इससे हमारे विचार में सभी आर्य जनों को बहुत ही लाभ होगा—यदि हम इससे प्रेरणा प्राप्त कर आपसी वैर-भाव भूल आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार करें और अपने स्वार्थों को तिलांजलि दें। ऐसे लेखों से आर्य समाज के संगठन को विशेष बल मिल रहा है और भविष्य में भी मिलेगा।

—राजकुमार आर्य
आर्य समाज मखयाली (मुजफ्फरनगर)

नया वैदिक साहित्य

१. धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम

लेखक—श्री पं० शिवकुमार शास्त्री, काव्य-व्याकरण तीर्थ, संसद् सदस्य। मूल्य १)५०

पं० शिवकुमार जी शास्त्री आर्यसमाज के पुराने महोपदेशक रहे हैं। पिछले ३० वर्षों के अपने अनुभवों को उन्होंने "धरती का स्वर्ग" नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

गृहस्थाश्रम को कैसे स्वर्ग बनाया जाए ? इस विषय में शास्त्री जी का मार्गदर्शन सभी के जीवन को नयी प्रेरणा देने में समर्थ है।

पुस्तक का मूल्य लागत मात्र १)५० है।

२. वैदिक गृहस्थाश्रम

पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड की महान् कृति : विवाह पर भेंट के लिए। कपड़े की जिल्द मूल्य ६)

३. धर्म का सार

स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय लिखित यह पुस्तक प्रचार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। साधारण व्यक्तियों को समझाने के लिए इसे ६ कथाओं में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य १), किन्तु १०० मंगाने पर ६५) सैंकड़ा

४. महान् दयानन्द मूल्य १)५० १००) सैंकड़ा

महर्षि दयानन्द को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हुए पं० शिवदयालु जी ने इस अनमोल पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

५. आदर्श परिवार — मूल्य ६० पसे। ४०) सैंकड़ा

राजस्थान के भूतपूर्व मंत्री श्री युगलकिशोर द्वारा लिखित यह पुस्तक प्रचार व विवाह आदि पर बांटने के लिए विशेष उपहार है।

६. प्रभु के चरणों में मूल्य १.५०।

प्रसिद्ध विद्वान् पं० हरिशरण जी द्वारा सामवेद के कुछ मंत्रों की सरल व्याख्या प्रार्थना रूप में प्रस्तुत की गयी है। मंत्रों को पढ़ते हुए साधक भाव विभोर हो जाता है।

७. वन्दना के स्वर मूल्य ८)

संपादक—श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

डीलक्स संस्करण १५)

अधिक से अधिक मंगाएं : बांटें

जन-ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अगर स्वामी दयानन्द न होते—
अगर दयानन्द संस्थान न होता ?

अगर स्वामी दयानन्द न होते तो भारत में एक भी व्यक्ति राम-कृष्ण का नाम लेने वाला न होता। किसी के सिर पर चोटी और गले में यज्ञोपवीत न होता। ईसाइयों के प्रबल आक्रमण, ब्रिटिश शासन की दुरभिसन्धि से भारतीयता की रक्षा करने वाला अकेला सिंह पुरुष था ऋषि दयानन्द।

ऋषि दयानन्द न होते तो क्या होता इसकी कल्पना करते हुए भी आज भय लगता है।

सम्पादक जी !

जिस तरह १८७५ में स्वामी दयानन्द ने भारत को बचाया था, ठीक उसी तरह १९७५ में महर्षि के नाम पर बने दयानन्द संस्थान ने आर्य समाज के गौरव की रक्षा शताब्दी के अवसर पर की है—सचमुच।

मैं सोचता हूँ कि इस समय अगर दयानन्द संस्थान न होता तो……।

- ★ कौन लाखों की संख्या में गुरुदेव दयानन्द का जीवन चरित्र छापता ?
- ★ सत्यार्थ प्रकाश को इतना सस्ता और सुन्दर कौन लाखों की संख्या में घर-घर पहुंचाता ?
- ★ नाना प्रकार के प्रचार पोस्टरों से देश की दीवारों पर आर्य समाज का गौरव कौन गुंजाता ?
- ★ कौन छोटी-छोटी पुस्तकों द्वारा दयानन्द की जय गुंजाता ?
- ★ संसार के कौने-कौने में 'वेद' वाणी स्थापित करने का साहस कौन करता ?

सम्पादक जी !

मैं कभी किसी की प्रशंसा नहीं करता। किन्तु दयानन्द संस्थान के कामों को देख-देखकर मेरा मन हर्ष के आंसू बहा रहा है। मैं प्रसन्न हूं इसलिए कि कोई संगठन तो आज भी ऐसा जीवित है जिसने दयानन्द के काम को पूरा करने का व्रत लिया है।

दयानन्द संस्थान के कामों के महत्व को आज कोई समझे या न समझे पर यह सच है कि जब कभी भी कोई निष्पक्ष भाव से सारी स्थिति पर विचार करेगा तो उसे यह मानना ही पड़ेगा कि……

……ऋषि दयानन्द न होते तो 'भारत' न बचता।

……दयानन्द संस्थान न होता तो शताब्दी पर आर्य समाज का गौरव न बचता।

सम्पादक जी !

आप निराश न हों, घबरायें नहीं, इन बड़े-बड़े नेताओं के विरोध से रास्ता न बदलें। देश में मेरे जैसे हजारों व्यक्ति दिन-रात आपके गीत गाने वाले अभी जीवित हैं। हमने आपको दुर्गा और शक्ति के रूप में देखा है। आपके लेखों को पढ़कर मुर्दे भी जीवित हो उठते हैं हम आपके साथ हैं।

आपके पास धन न होने पर भी आपने जो किया है वह लाखों रुपये जमा करने वाली संस्थायें भी न कर सकीं हैं। यही आश्चर्य है, यही ईश्वर विश्वास है, यही सत्य है।

आपकी जय हो ! दयानन्द ऋषि की जय हो, धर्म जी जय हो। सत्य की जय हो।

जब भी मेरे जैसे तुच्छ व्यक्ति को आपका आदेश मिलेगा हम अपना सब कुछ आपके चरणों पर अर्पित कर देंगे और आप तो दयानन्द के प्रति समर्पित हैं ही।

विदिशा—

आपका पुत्र
जीवन प्रकाश
एम० एस सी०

मुजफ्फरनगर में शताब्दी समारोह—

११-१२-१३ जून को मुजफ्फरनगर में क्षेत्रीय शताब्दी समारोह सम्पन्न हो रहा है। स्थानीय जनता में उत्साह है और आशा की जा रही है कि इस आयोजन से आस-पास की जनता में नव-जागरण उत्पन्न होगा।

—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री स्वामी इन्द्रवेश व मंत्री श्री मुरारीलाल जी पुनः निर्वाचित हुए।

नया : आकर्षक : वैदिक साहित्य

१—श्री मद्दयानन्द प्रकाश

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती लिखित महर्षि दयानन्द का भक्ति-भाव पूर्ण बड़ा जीवन चरित्र।

पृष्ठ ४०० मूल्य ६ रु०=किन्तु प्रचार के लिए

३० जून १९७६ तक केवल ३०० रु० सैकड़ा

२—बाल सत्यार्थ प्रकाश

बच्चों—स्कूलों व साधारण पढ़े लिखे व्यक्तियों के लिए सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा लिखित मूल्य २-५० पैसे १५० सैकड़ा।

३—सामवेद—आध्यात्मिक भाष्य: पं० बुद्धदेव विद्यालंकार के गुरु वयोवृद्ध पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड द्वारा किया यह अनुपम भाष्य अब छपकर तैयार है।

मूल्य सजिल्द= १५ रु० किन्तु कम से कम १० प्रात मंगाने पर ३० जून तक केवल ७५ रु०

शीघ्रता करें : अपना आदेश आज ही भेजें—

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा गांधी

★ ★

की श्रद्धांजलि

★ ★

महर्षि के चरणों में

卐 卐

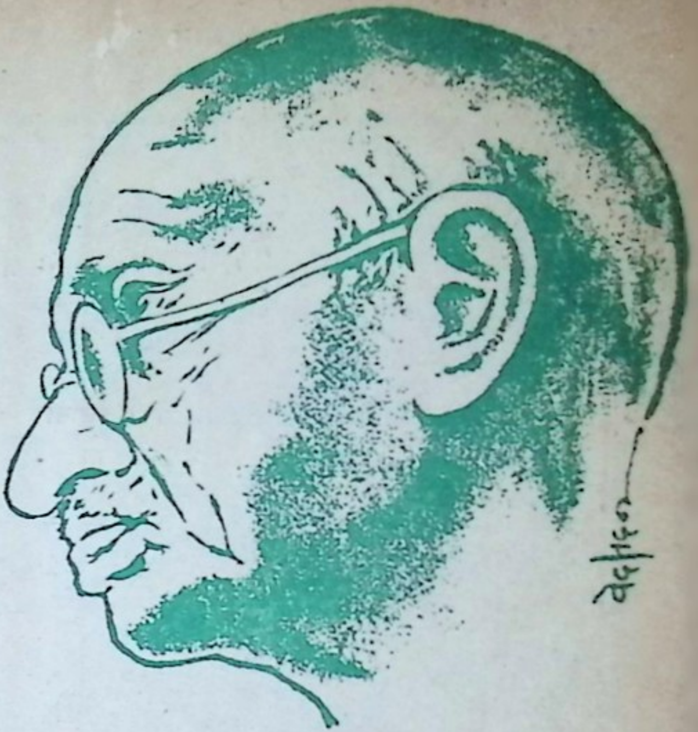

पंचगनी, १ला
५/३२

महर्षि दयानंदने धर्म जागृति बढ़ाई। आर्य संस्कृतिका, वेदाध्ययनका, संस्कृत भाषाका, हिंदीका प्रचार, अस्पृश्यतादि बाधकको धोनेका प्रयत्न किया। इससे सब कार्योंके लिये महर्षिका स्थान चिरस्थायी रहेगा इसमें कोई संदेह नहीं है।

मोहनदास गांधी

मुद्रक-प्रकाशक-सम्पादक पं० राकेश रानी द्वारा दयानन्द संस्थान के लिए सैनी प्रिंटर्स में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान [साप्ताहिक]
वेद मन्दिर, १५६७ हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-११०००५ । दूरभाष : ५६६६३६/२०१५८४

रविवार
१६ जून
१९७६

रजिस्टर्ड नं०
D-(C) 619

शुभ अवसरों के लिये
21 कीमती जड़ी बूटियों से निर्मित

एम डी एच
हवन सामग्री
शुद्ध और पवित्र

अपने नज़दीकी करयाना
मर्चेन्ट से खरीदें ।

महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटिड
9/44, इन्डस्ट्रियल ऐरिया, कीर्तिनगर, नई देहली-110015 फ़ोन: 585122, 567100
शोरूम: खारी बावली, देहली-6 फ़ोन: 268704
चीफ़ स्टाकिस्ट : रूपक स्टोर्ज़, अजमलख़ान रोड, नई देहली-5
स्टाकिस्ट : मैसर्ज किशनचन्द सूरज प्रकाश, खारी बावली, देहली-6

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi